ALL INDIA ASSOCITION FOR EDUCATIONAL RESEARCH 2009
ABSTRACTS OF PAPERS (HINDI)
Arranged Alphabetically: Name wise (Not surname) 54 Abstracts
HA1-11, HB1-2, HD1-3, HG1-3, H11, HJ1-2, HK1-4, HM1-3, HN1, HP1-5, HR1-6, HS1-9, HU1, HV1-3

HAI
उच्च षिक्षा में गुणात्मक क्रांति

1. अलका कटियार,, षिक्षा शास्त्र विभाग, महिला महाविद्यालय, कानपुर।
2. प्रतिभा वर्मा,सहायक, गृह विज्ञान विभाग, सरोजनी नायडू, शा0क0पी0जी0 कॉलेज, भोपाल।

21वी सदी ''सूचना क्रांति'' का युग है जहाँ सब कुछ ''डब्लू डॉट कॉम'' में समाहित है। जहाँ जिंदगी की परिभाषा ''यूज एण्ड थ्रो'' में बदल चुकी है। पूरे विष्व में सूचनाएं कम्प्यूटर के माउस क्लिक से आपके सामने प्रकट होगी। इन्टरनेट के संसार में ''ज्ञान'' एक बड़ी शक्ति है।

षिक्षा ही 'ज्ञान' का स्त्रोत है। सारा विष्व आज भारतीयों के 'ज्ञान–समाज' के निर्माण में किये जा रहे योगदान को सराहना है। ''चाँद पर पानी की खोज'' द्वारा इसी ज्ञान का परचम विष्व में लहरा रहा है।

भारतवर्ष में ज्ञान आधारित समाज के विकास के लिये भारत सरकार द्वारा 13 जून 2005 को सैम पैत्रोदा की अध्यक्षता में ''राष्ट्रीय ज्ञान आयोग'' (छज्ञब) की स्थापना की गई। जिसका मुख्य उद्देष्य शैक्षिक प्रणाली में उत्कृष्टता का निर्माण व ज्ञान क्षेत्रों में भारत के प्रति स्पर्द्धात्मक लाभ को बढ़ावा देता है। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग ने दिसम्बर 2007 में उच्च षिक्षा संबंधी सिफारिषों में तीनों आयामों– विस्तार (म्गचंदेपवद), गुणवत्ता (म्गबमससमदबम) एवं समावेष (प्दबसनेपवद) पर बल दिया है।

°°°

HA2
पर्यावरण चेतनाः वेद और मानव जीवन

अलका पाण्डेय, हिन्दी विभाग, लखनऊ विष्वविद्यालय लखनऊ

'हमारी संस्कृति का आधार वेद रहे हैं । 'अथर्ववेद की ऋचा में पर्यावरण के उद्भव एवं विकास का बीज अंकुरित होते हुए सहजता पूर्वक देखा जा सकता है यथा –

तात्पर्य है धरती दूध देने के लिए पन्हाई हुई गाय है । वह पर्जन्य प्रिया है वर्षा से जलमयी होकर अनेक प्रकार की वनस्पतियों को उत्पन्न करती है और जीवों को धारण करती है । आज इस पर्जन्य–प्रिया धरती को मानव की स्वार्थलिप्सा ने, उसके अहंकार ने पर्यावरण और संस्कृति के संवेदन–षील आपसी सम्बन्धों को क्षतिग्रस्त कर दिया है ।

धरती , जल , अग्नि , आकाष तथा वायु इन पंचतत्वों के आपसी सम्बन्धों का उल्लेख वैदिक काल में किया गया है । 'द्यावा–पृथिवी सूक्त' में पृथ्वी को मां तथा नभ को पिता के रुप में सम्बोधित करके उनसे अन्न और यष देने की प्रार्थना की गई हैः– उपनिषदों में अन्नमय प्राण की बात कही गई है । तैत्तिरीय उपनिषद में अन्न में जल और तेज दोनों की स्थिति स्वीकार की गई है ।

ग्लोबल वार्मिंग का सिद्धान्त कार्बनडाइऑक्साइड के अनुपात की बात करता है तथा कूलिंग का सिद्धान्त पृथ्वी के अक्षीय झुकाव; अक्षीय दिषा में प्राकृतिक परिवर्तन की बात करता है। 24 फरवरी 1895 में 'न्यूयॉर्क टाइम्स' में 'जिओलॉजीस्ट थिंक दी वर्ल्ड में विल बी फ्रोजन अपअगेन' षीर्षक के माध्यम से 'ग्लोबल वॉर्मिंग' के खतरे एवं 'हिमयुग' के विषय में चेतावनी दी थी ।

°°°

HA3

बच्चों के मनोसामाजिक विकास के आइने में प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता

1. अमिता बायपेयी, **2.** बजरंग भूषण,,
शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्ववविद्यालय, लखनऊ, उ0प्र0 (भारत)

शिक्षा, दो अक्षर का एक ऐसा शब्द जिसकी गहराई और व्यापकता इतनी विशाल है, जिसमें इतनी व्यापक शक्ति है कि यह न केवल रहस्यमयी जीवन के विभिन्न आयामों के कपाटों को उद्भासित करती है अपितु इन

जीवन–आयामों को ऐसी दिशा देती है जो जीवन को सार्थक और पूर्ण बनाते हैं। शिक्षा मानव को पूर्ण बनाती है, उसकी अन्तर्निहित शाक्तियों का विकास करके उसे समाज में सामंजस्य बनाकर अपना विकास करने तथा समाज की नवीन रचना करने की शक्ति प्रदान करती है। स्पष्ट है–मानव जीवन के सन्दर्भ में शिक्षा का अभूतपूर्व महत्त्व है।

बच्चे के विकास के कई पक्ष हैं। मसलन, शारीरिक विकास, मानसिक विकास, आध्यात्मिक विकास एवं चारित्रिक विकास आदि। मानसिक और सामाजिक रूप से बच्चा जितना ही ज्यादा स्वस्थ होगा अर्थात् उसका मनोसामाजिक विकास जितना ही उन्नत होगा वह उतना ही उपयोगी नागरिक होगा। बच्चे का यह मनोसामाजिक विकास उसे दी जा रही शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करता है।

बच्चे को दी जा रही प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता एवं उसके मनोसामाजिक विकास का घनिष्ठ सम्बन्ध है। शिक्षा की गुणवत्ता जितनी ज्यादा होगी, बच्चे का मनोसामाजिक विकास उतना ही ज्यादा होगा। प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता के निर्धारण में नीतियों एवं नीति निर्माताओं का महत्वपूर्ण स्थान है।

°°

HA4

स्ववित्तपोषित बी0 एड0 संस्थाओं की आवश्यकता और भविष्य

1. अमिता सिंह, **2.** अनामिका देवक
शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्ववविद्यालय, लखनऊ, उ0प्र0 (भारत)

स्ववित्तपोषित का अर्थ है कि "शिक्षा के कार्यक्रमों पर होने वाले व्यय को छात्रों से शुल्क के रूप में लिया जाय। स्ववित्तपोषित संस्थाओं में काफी मात्रा में शुल्क ली जाती है। शुल्क भुगतान करना ही स्ववित्तपोषित संस्थाओं में नामांकन होने की एकमात्र कसौटी है। छात्र इन संस्थाओ के माध्यम से लाभान्वित हुये है और हो रहे है। सभी स्ववित्तपोषित संस्थाओं में चलने वाले बी0 एड0 पाठ्यक्रम व्यवसायिक एवं रोजगार उन्मुख है जिनकी बाजार में मांग बढती जा रही है। स्ववित्तपोषित संस्थाओं का प्रारम्भ करना महत्वपूर्ण, आवश्यक एवं समयानुकूल है।

मेधावी छात्रों की अधिकता तथा सरकारी सीटों की अपर्याप्तता के कारण वर्तमान समय में स्ववित्तपोषित संस्थायें एकमात्र विकल्प है। यदि स्ववित्तपोषित संस्थायें अपनी गुणवतता को सुधार लें तथा उनका आधार शुल्क ना होकर गुणवत्ता हो तो ये संस्थायें छात्रों को उज्जवल भविष्य प्रदान कर सकती है।

°°

HA5

आधुनिक भारत के स्त्री शिक्षा का वर्तमान परिदृश्य

1. आनन्द यादव, हण्डिया पी0जी0 कालेज, हण्डिया इलाहाबाद
2. धर्मेन्द्र कुमार भारतीय, कृषक महाविद्यालय , राजगढ़ मीरजापुर

आज भारत के हर क्षेत्र, हर विभाग में महिलाओं ने सराहनीय भागीदारी की है, परन्तु अगर महिलाओं की स्थिति का अध्ययन किया जाए तो आज भी महिलाओं का हर क्षेत्र (आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक) में शोषण किया जा रहा है। आज जहां विश्व के विकसित देशों में स्त्री साक्षरता का प्रतिशत 90 के ऊपर है वहीं हम अभी स्त्रियों की शिक्षा का केवल अर्धशतक लगा पाये हैं। अर्थात आधी महिला जनसंख्या आज भी शिक्षित है और शिक्षा के अभाव के बिना हम स्त्रियों/महिलाओं के हर क्षेत्रों में सहभागिता एवं सशक्तीकरण के तमाम कार्यक्रम कागजों में ही समेट देंगे। वर्तमान समय में जहां केवल 53.67 प्रतिशत महिलायें ही शिक्षित हैं, इसके पीछे क्या–क्या कारण रहे इसका ऐतिहासिक अध्ययन की आवश्यकता है।

°°

HA6

अध्यापक शिक्षा में मूल्याकंन प्रणाली : समीक्षा एवं सुझाव

अर्चना पुरोहित, शाह गोवर्द्धनलाल काबरा शिक्षक महाविद्यालय (सी.टी.ई.), जोधपुर

किसी अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की प्रमाणिकता को ज्ञात करने के लिए इस बात को जानना आवश्यक है कि हम किस कोटि के अध्यापक का निर्माण करना चाहते है। इसके लिए मूल्याकंन प्रणाली को ध्यान में रखना आवश्यक है। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षण में सुधार करना है। अध्यापक–शिक्षा में मूल्याकंन के उद्देश्य –

1. पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को प्राप्त करने में कहां तक सफलता प्राप्त हुई है।

2. शिक्षण की प्रक्रिया, अनुभवों, क्रियाओं तथा विधियों को लागू करने में वह कहां तक सफल हुए है ?

अध्यापक शिक्षा में मूल्याकंन के प्रकार –

(1) प्रारम्भिक मूल्याकंन (2) निर्माणात्मक मूल्याकंन (3) अंतिम मूल्याकंन

अध्यापक शिक्षा में मूल्याकंन के उपरांत सुधार सम्बंधी क्षेत्र –

(1) प्रशासनिक निर्णय (2) कक्षा कार्य सम्बधी निर्णय (3) परामर्श संबंधी निर्णय (4) अनुसंधान सम्बन्धी निर्णय

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्यापक शिक्षा में मूल्याकंन सम्बंधी सुधार हेतु सुझाव –

1. पाठ्यसहगामी क्रियाओं द्वारा सामाजिक विकास पर बल दिया जाए ।
2. प्रशिक्षण संस्थाओं के स्तर में उन्नयन किया जाये ।
3. निरीक्षकों द्वारा निरीक्षण कर उचित मार्गदर्शन हेतु सुझाव दिया जाए ।
4. मूल्याकंन विधियों को अधिक व्यापक बनाया जाए ।
5. सैद्धान्तिक पक्ष के साथ–साथ प्रायोगिक पक्ष पर विशेष बल दिया जाए ।

°°°

HA7

रोजगारपरक शिक्षा : आज की आवश्यकता

आरती कनौजिया,, शिक्षा शास्त्र विभाग, शशि भूषण बालिका विद्यालय डिग्री कालेज, लखनऊ।

यह सर्वविदित और सर्वव्यापी सत्य है कि शिक्षा के बिना विकास सम्भव नहीं यही कारण है कि स्वतंत्रता के पश्चात देश के नागरिकों को शिक्षित करने के अनवरत प्रयास किये जा रहे हैं। देश की जनसंख्या के 55 करोड़ लोगों का 25 वर्ष से कम आयु का होना एक बहुत बड़ा जनसंख्यात्मक लाभांश है, क्यों कि यह एक विशाल मानव संसाधन है। अब समय आ गया है कि हम अपनी शिक्षा व्यवस्था में संशोधन नहीं बल्कि परिवर्तन करें ताकि देश की भावी पीढ़ी अपनी क्षमतानुसार अपना विकास कर सके। उन पर होने वाले विषयों, परीक्षाओं का बोझ कम करना होगा। इस उद्देश्य से केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री कपिल सिब्बल ने कक्षा 10 से बोर्ड परीक्षा को हटाने, विद्यालयों में सामान पाठ्यक्रम लाने, पर्यावरण शिक्षा व युवाओं को सशक्त करने हेतु खेलकूद को आवश्यक करने की सिफारिश की है।

°°°

HA8

शिक्षा के निजीकरण का औचित्य

1. आशीष पाठक, आर. एन. वी. डी. खैरा कॉलेज, झाँसी

2. अन्जना त्रिपाठी, एस. वी. बी. एम. कॉलेज, कानपुर

सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों में आई निजीकरण की बाढ़ से शिक्षा का क्षेत्र भी अछूता नहीं रह गया है। अन्य क्षेत्रों में निजीकरण के प्रभाव को देखते हुए यह माना जा रहा है कि इस प्रयोग से शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता में वृद्धि होगी। समाजिक विकास एवं आर्थिक क्षमता में लगातार वृद्धि हेतु 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराने के साथ ही नागरिकों की उच्च शिक्षा की व्यवस्था भी सरकार को ही करनी होती है

कोठारी कमीशन ने शिक्षा के बजट को सकल घरेलू उत्पाद का 6ः करने की सिफारिश की थी जिसे आज तक प्राप्त नही किया जा सका।

शिक्षा उन 12 प्रमुख सेवा क्षेत्रों में है जिन्हें गैट्स के अर्न्तगत सदस्य देशों ने स्वीकार किया है इसके क्रियान्वयन के साथ ही शिक्षा में निजीकरण में वृद्धि हो रही है। सरकार ने उच्च शिक्षा में निजी क्षेत्र को आमंत्रित तो किया है किन्तु प्रबन्धन की अक्षमता और मनमानी पर अंकुश नही लगाया है।

शिक्षा विकास की अनिवार्य शर्त है और सरकार के पास इसके लिए पर्याप्त आर्थिक संसाधन नही हैं। ऐसी स्थिति में निजीकरण ही एक उपाय है, जिसे कतिपय दिशा–निर्देशों के द्वारा लागू करना चाहिए।

°°°

HA9

शिक्षा और महिला सशक्तिकरण

1. अविनाश कुमार सिंह, राजनीति विज्ञान विभाग काशी हिन्दू विश्व विद्यालय वाराणसी।
2. तुलिका मिश्रा, शेपा इंस्टिच्यूट आफ एजुकेशन वाराणसी।

भारत ही नही सम्पूर्ण विश्व के शिक्षा का महत्व स्त्री और पुरूष के लिए बराबर है। वहीं भारत में लैगिक असमानता के कारण स्त्री और पुरूष की शिक्षा में काफी अन्तर पाया जाता है। इसका प्रमुख कारण भारत में स्त्रीयों की उपेक्षा रही है।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत में स्त्री और पुरूषों को सामान्य श्रेणी में रखा गया है और उनको सामान्य अवसर दिलाने के लिए अनेक कानूनी उपाय किए गये । शिक्षा किसी भी राष्ट के विकास की आधारशिला है। शिक्षा नारी के सशक्तिकरण का एक सकारात्मक और सरल उपाय है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों का व्यापक उल्लेख किया जायेगा।

°°

HA10

शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में गुणवत्ता ह्रास के कारण एवं गुणवत्ता बनाये रखने हेतु सुझाव

---

1. अवनीश चन्द्र सोनकर, दयानन्द पी0जी0 कालेज, बछरवां, रायबरेली
2. सुधांशु कुमार पाण्डेय, रामा महाविद्यालय, चिनहट, लखनऊ

किसी भी राष्ट्र का भविष्य शिक्षा पर निर्भर करता है, और सभी क्षेत्रों में शिक्षा प्रदान करने का दायित्व शिक्षक पर होता है। सर्वप्रथम हमें यह जानने का प्रयास करना चाहिए कि शिक्षा क्या है? हम समझते है कि शिक्षा का अर्थ है– स्कूल जाना, पढ़ना–लिखना सीखना, परीक्षाएं पास करना आदि। जबकि इसके विपरीत शिक्षा का अर्थ है कि वह आपको सभी समस्याओं का सामना करने के लिए समर्थ बनाये।

शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों जैसे–पूर्व प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, शिक्षक–शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा, प्रबंधन शिक्षा, कृषि शिक्षा, में गुणवत्ता ह्रास के कारण संसाधनों की कमी, कुशल एवं योग्य शिक्षकों की कमी, पाठ्यक्रम में भिन्नता, गुणात्मक शोध का अभाव, आय की असमानता, मान्यता के नियमों में लचीलापन है

शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में गुणात्मक सुधार हेतु निम्नवत् सुझाव है–

- संसाधनों की कमी को दूर करने का प्रयास किया जाए।
- गुणात्मक शोध को प्रोत्साहन प्रदान किया जाए।
- आय की असमानता को दूर करने का प्रयास किया जाए।
- मान्यता प्रदान करने के नियमों को कठोरता से लागू किया जाए।

गुणवत्तापरक शिक्षा का आशय है कि, शिक्षा परीक्षापयोगी नहीं अपितु जीवनोपयोगी होनी चाहिए।

°°

AF11

स्वतंत्र भारत में महिला शिक्षा के उभरते आयाम

आफताब जाकरा सिद्दीकी,सीतापुर शिक्षा संस्थान, सीतापुर

आधुनिक युग ज्ञान–अर्थ–व्यवस्था का युग है। ग्लोबीकरण, उदारीकरण, निजीकरण और अन्तर्राष्ट्रीयकरण के फलस्वरूप सम्पूर्ण विश्व संकुचित होकर एक छोटे गांव के समान हो गया है इसी से मानव की समस्त क्रिया–कलापों में एक अभूतपूर्व क्रान्ति सी आ गयी है। भौतिक वाद और उपभोक्तावाद ने समाज के सभी वर्गो को अपनी चपेट में ले रखा है। घोर प्रतिस्पर्धा को जो स्परूप आज हमारे सामने है उससे पहले इतिहास में कभी भी नहीं देखा गया। समाज के सभी वर्गो के साथ–2 महिला वर्ग भी बिना प्रभावित हुए नहीं रह सका। यह तो लगभग सर्वमान्य है कि महिला का आधिपत्य सम्पूर्ण आकाशं और पृथ्वी के आधे भाग पर है इसलिए उसे अपने उत्तरदायित्व को उचित निर्वाह योग्य बनाने के लिए यह अति आवश्यक है कि उसके शैक्षिक स्तर को निरन्तर वृद्धि करने के समुचित अवसर प्रदान किये जाये ताकि वह अपने पारिवारिक, सामाजिक, राज्ञनैतिक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों का पूरा–2 निर्वाह कर सके और नेपोलियन बोनापार्ट के उस अमर कथन की सार्थकता को पूर्णतः सिद्ध कर सके, ''तुम मुझे शिक्षित मां दो और मैं तुम्हें उसके बदले में एक सभ्य, सशक्त और समृद्धशाली राष्ट्र देने का वचन देता हूं। महिला शिक्षा को पूर्ण रूप से

बहुआयामी बनाना होगा इसके लिए उसको सामान्य पारम्पारिक शिक्षा के क्षेत्र से बाहर निकालना होगा। वैज्ञानिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा तथा प्रबन्धन शिक्षा इसके कुछ स्वरूप है।

****

HB1

सुधार गृह में शिक्षको की भूमिका में गुणवत्ता के सन्र्दभ में एक अध्ययन

बबिता सिंह, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद।

प्रत्येक समाज में सास्कृतिक आदर्शों के अनुरूप एक जीवन शैली व कुछ मान्य– व्यवहार होते है। यह व्यवहार समाज के सांस्कृतिक आदर्शो की प्राप्ति में सहायक होते है और इनके द्वारा समाज का संतुलन बना रहता है। किन्तु कतिपय कारणो से जब व्यक्ति मान्य–आदर्शो के प्रतिकूल आचरण करता है। तो उसे विचलन की संज्ञा दी जाती है। विचलन द्वारा समाज में विघटन की प्रक्रिया बढती है तथा समाज का सन्तुलन डगमागने लगता है। सामाजिक विघटन की समस्याओं में सर्वव्यापी समस्या बाल अपराध है।

बाल अपराध एक ऐसा अभिशाप है, जिससे हमारे समाज का एक बडा हिस्सा प्रभावित होता है। इन अपराधो को करने वाले बच्चे अक्सर सही दिशा निर्देश के अभाव में ऐसा कर बैठते है जबकि ये बच्चे बहुत ही सृजनात्मक , कल्पनाशील, क्षमतावान, एवं प्रतिभावान हो सकते है।

उ0प्र0 बाल अधिनियम 1951 के अन्तर्गत अनुमोदित विद्यालयो की स्थापना की गयी है। ये विद्यालय बालक की देख–रेख, उनकी सुरक्षा तथा उनके लिए शैक्षणिक एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण की व्यवस्था करते है। जिससे बालक इन सुधार गृह से जाने के पश्चात एक समान्य व्यक्ति जैसा जीविकोपार्जन कर सकें।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि सुधार गृहो में जो विद्यालय चलाये जा रहे है। क्या वे ठीक ढंग से बालको को शिक्षित कर रहें है, तथा शिक्षको के कार्य को अपराधी बालक कहॉ तक स्वीकृत करते है। सुधार गृह के शिक्षको की भूमिका पर बाल अपराधियो के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करना। वाराणसी के रामनगर में स्थित सुधार गृह के बाल अपराधियों को इस अध्ययन में जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

°°

HB2

प्रारंभिक शिक्षा के प्रायोगिक आधार

1. भूपेन्द्र सिंह देथा 2. जी•एस•शेखावत

एपिक्टेट्स :– ने कहा कि राष्ट्र की सर्वोच्च सेवा यह है कि ऊँचे – ऊँचे भवनों का निर्माण करने के बजाय नागरिकों के चरित्रो का उच्चीकरण किया जाए। मूल्यविहिनता के बंधनों में जकड़े नागरिक ऊँची – ऊँची अट्टालिकाओं में वास करे उससे तो अच्छा है कि उच्च आदर्शो से अनुप्राणित निर्धन नागरिक घास–फूस की बनी झोपड़ियो में रह ले। इवान इलिच द्वारा लिखित पुस्तक ''डिस्कूलिंग'' (Deschooling निर्विद्यालयीकरण) में उल्लेखित वर्तमान विद्यालय मानवीय शोषण का केंद्र बन गए है। वर्तमान समय में लगभग सभी विद्यालय अपने छात्रों से मनमानी फीस वसूल कर रहे है वही दूसरी ओर अपने अध्यापकों के वेतन एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक गुणवत्ता में निरंतर कमी ही दिखाई दे रही है। आज हमारे देश में भी ऐसी शिक्षण संस्थाए मिल जाएगी जिन्हें हम 5 Star स्कूल भी कहे तो गलत नहीं होगा क्योंकि उनमे बच्चों के लिए नाश्ता, खाना वास्तव में 5 Star Hotel से ही आता है। दूसरी ओर गरीब छात्रों के लिए 2–4 कमरों वाले स्कूल भी है जहां न तो पूरा स्थान बैठने को है वहां खेल के मैदान व अन्य सुविधाएं ढूंढना तो तपते रेगिस्तान में जुगनुओं को ढूंढने–सी बात होगी।

शिक्षा मे निजिकरण के कारण कितना भेदभाव बढ़ रहा है, खुले आम शिक्षा को बेचा जा रहा है। इन विद्यालयों की अन्य कमियां इस प्रकार है :–

1 बालकों पर अत्यधिक शैक्षिक बोझ का होना।
2 बालकों की जिज्ञासा में कमी।
3 शैक्षणिक वातावरण एवं सृजनात्मकता का अभाव।
4 पाठ्यसहगामी क्रियाओं का अभाव।
5 शिक्षा का परम् उद्वेश्य परीक्षा पास करने तक सीमित होना।
6 नैतिक एवं मूल्य शिक्षा का अभाव।

°°

HD1

महिला सामाख्या : स्त्री समानता के लिए शिक्षा

दीपा कृष्णन, एल एम पी वी गर्ल्स कालेज गोसाईगंज, लखनऊ

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं हेतु शैक्षिक अवसरों का प्रावधान राष्ट्रीय प्रयास का एक महत्त्वपूर्ण भाग रहा है। इन प्रयासों ने शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक असमानता को (विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों एवं वंचित समुदायों में) दूर करने के सार्थक परिणाम दिये हैं। प्रोग्राम ऑफ एक्शन (च्व्। 1992) में इन दिशा–निर्देशों को एक क्रियापरक रणनीति में परिवर्तित करके Education for Women's Equality lsD'ku (Chapter-XII, Pages 105-107) में रखा गया, जिसमें शैक्षिक प्रक्रिया में महिलाओं की सहभागिता के रूप में महिला सशक्तिकरण पर जोर दिया गया। इसी संदर्भ में छच्म् एवं च्व्। लक्ष्यों को पूर्ण करने के लिए 1987–89 में महिला समाख्या प्रोजेक्ट प्रारम्भ किया गया जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा और सशक्तिकरण पर बल दिया गया। सर्वप्रथम महिला सामाख्या ;म्कनबंजपवद वित ॅवउमद म्ुनंसपजलद्ध कार्यक्रम का प्रारम्भ, कर्नाटक, गुजरात एवं उत्तर प्रदेश में वर्ष 1989 में हालैण्ड की सहायता से हुआ।

महिला समाख्या प्रोजेक्ट महिलाओं के लिए शैक्षिक समानता के सम्बन्ध में निम्न उद्देश्यों को लेकर संचालित हो रहा हैः–

1. महिलाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि करना और आर्थिक क्षेत्र में उत्पादक और कार्यकर्ता के रूप में उनके योगदान से उनकी पहचान कराना।
2. ऐसे वातावरण का निर्माण करना जहॉ महिलायें ज्ञान एवं सूचनायें प्राप्त करके सशक्त बन सकें ।
3. महिला संघ को गॉवों में शैक्षिक कार्यक्रमों की सहायता के योग्य बनाना।
4. किशोरियों और महिलाओं को शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराना।
5. औपचारिक एवं निरौपचारिक शैक्षिक कार्यक्रमों में पर बालिकाओं एवं महिलाओं की सहभागिताऐसा वातावरण तैयार करना जिसमें महिला समानता के लक्ष्यों को पूरा करना सम्भव हो सके।

°°°

HD2

प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का अध्ययन

1. दिनेश सिंह, राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

2. धर्मेन्द कुमार सरार्फ, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

शिक्षा किसी राष्ट्र की प्रगति एवं समृद्धि की सूचक होती है। राष्ट्र का विकास उसकी शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करता है। शिक्षा ज्ञान का ऐसा अमूल्य अस्त्र है जो अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है जिससे सभ्यताएँ बनती हैं, सस्कृतियॉ परवान चढ़ती है, एवं इतिहास लिखे जाते हैं। शिक्षा जीवन दर्शन है एवं विकास का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। जीवन को सुसंस्कारित एवं मानव को विवेकशील मानव बनाने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारतीय मनीषा में **"असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय"** की जो कामना की गयी है, वह अशिक्षा के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश में जाने एवं सत्य की ही कल्पना है। शिक्षा ज्ञान एवं प्रकाश की ऐसी अंतहीन यात्रा है जो मानवता के विकास, मनुष्य को सम्पूर्ण नेक इंसान और विश्व तथा स्वयं के लिए उपयोगी नागरिक बनाती है।

शिक्षा को समाज में विस्तारित करने में शिक्षक की भूमिका अहम होती है। बालक के व्यवहारों के परिमार्जन, सामाजिक उत्तरदायित्वों के बोध, नवीन संचेतना के विकास, नैतिक एवं चारित्रिक गुणों के विकास में शिक्षक का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक का कार्य निष्पादन सर्वाधिक महत्व का निवेश है। शिक्षा से सम्बन्धित प्रत्येक योजना का क्रियान्वयन शिक्षकों के व्यैक्तिक व्यवहार, शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं, कार्य निष्ठा व शिक्षण दक्षता पर निर्भर करता है।

°°°

HD3

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के माध्यम से मूल्य पल्लवन

1. दिव्या शर्मा **2.** रेणु ठाकुर

लिंग्यास ललिता देवी इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड साइंसिस

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा और जीवन निर्माण प्रक्रिया के संबंधों की लंबी परंपरा रही है। शिक्षा प्रक्रिया में व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास इस प्रकार होने की अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी सामाजिक भूमिकाओं के

निर्वाह के साथ–साथ अपनी निजी विशिष्टताओं के विकास और परिमार्जन के लिए सजग और सक्रिय बना रहे। विभिन्न आयोगों और शिक्षा नीतियों के अंतर्गत शिक्षा में मूल्यों को अंतर्निहित किए जाने की सिफारिश की जाती रही है। कोठारी कमीशन (1964), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986, 1992), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2000 और 2005 में भी समेकित उपागम पर बल देते हुए मूल्य शिक्षा को विद्यालयी शिक्षा के महत्त्वपूर्ण घटक के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

शिक्षा और मूल्य शिक्षा से संबंधित उपलब्ध व्यापक साहित्य का सर्वेक्षण करने पर यह तथ्य प्रकाश में आया है कि मूल्य शिक्षा की दृष्टि से विद्यालयी शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों का अध्ययन विभिन्न स्तरों (क्रमशः 1–12 और प्राथमिक/प्रारंभिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर) पर प्रचुर मात्रा में हुआ है।

प्रस्तुत शोध पत्र में इसी तर्क को आधार बनाते हुए यह जानने का प्रयास किया जा रहा है कि पूर्व प्राथमिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से किस प्रकार अनुदेशनात्मक प्रक्रिया में समेकित मूल्य शिक्षा का तत्त्व जोड़ा जा रहा है और किस प्रकार समेकित उपागम पूर्व प्राथमिक विद्यार्थियों में मूल्यों के विकास में सहायक हो सकता है? शोधार्थियों द्वारा पूर्व प्राथमिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के व्यावहारिक पक्ष से संबंधित गतिविधियों के विषय में प्रशिक्षणार्थियों के अनुभवों को एकत्रित किया गया है तथा इनके प्रति प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्तियों का अध्ययन कर कार्यक्रम की आलोचनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करना ही प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

°°

HG1
वर्तमान परिप्रेक्ष्य–विभिन्न शैक्षिक योजनाएं–गुणवत्ता का सदंर्भ

गीता रानी,बप्पा श्री नारायण वोकेशनल डिग्री कालेज,लखनऊ।

संवैधानिक संशोधन (1976) के पश्चात् संघ एवं राज्य सरकार दोनों को ही शिक्षा के प्रशासनिक एवं वित्तीय दायित्वों का भार सौंपा गया था। तब से लेकर आज तक सभी शैक्षिक स्तर (प्राथमिक,माध्यमिक एवं उच्च स्तर) पर गुणवत्ता स्तर को बनाए रखने और सार्वभौमिक शिक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति का सत्त प्रयास किया जाता रहा है। शिक्षा के क्षेत्र की एक पुरानिधानित योजना 'सर्व शिक्षा अभियान केन्द्र और राज्य सरकारों' के वित्तीय सहयोग से राज्य में संचालित है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य 6–14 वर्ष के सभी बच्चों को वर्ष 2010 तक उपयोगी एवं सार्थक प्रारम्भिक शिक्षा व्यवस्था करना है। इस योजना के अन्तर्गत आच्छादित कार्यक्रम यथा –म्लै – ।प्म ;म्कनबंजपवद ळनंतंदजमम ैबीमउम – ।सजमतदंजपअम – प्ददवअंजपअम म्कनबंजपवदद्ध डप्क.क।ल.डम।स.ैब्म्डम्ए क्प्ेजतपबज च्तपउंतल म्कनबंजपवद च्तवहतंउउमद्ध डै ;डीपसं ैउीलंद्ध छण्ठण्ठण्;छंजपवदंस ठंस ठींअंदद्ध झ्ळठट ;झ्ेंजनतइं ळंदकीप ठंसपां टपकलसंलेंद्ध झ्टक्ल ;झ्ंदलं टपकीलं वींद ल्वरंदंद्ध ैबीवसंतीपचण इत्यादि योजनाएं मात्र आर्थिक सहायता प्रदान करने तक सीमित रह जाती है। इन योजनाओं से विद्यार्थियों के मात्र माता–पिता को ही प्रेरित किया जा सकता है न कि उस मूल व्यक्ति (विद्यार्थी) को जिसके अपने प्रयास के बिना उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति स्तर को प्राप्त कर पाना दुष्कर ही नहीं अपितु असंभव कार्य है। प्रशासन की ये नीति एवं योजनाएं शिक्षा के प्रचार–प्रसार, उसकी गुणवत्ता स्तर के सुधार हेतु अपेक्षित और आवश्यक है, परन्तु जो वास्तविक लक्ष्य (विद्यार्थी) है उसको तो छू तक नहीं पा रहे हैं, प्रभावित करना तो बहुत दूर की बात है।

°°

HG2
वैदिक साहित्य में स्त्री षिक्षा के अधिकार

1. गोपाल कुमार षुक्ल, आई.जी.पी.जी. कॉलेज,गौरीगंज, सुल्तानपुर
2. अनुराधा त्रिपाठी, भालचन्द्र इंस्टीट्यूट ऑफ एजूकेषन ऐण्ड मैनेजमेन्ट,लखनऊ

स्त्री षिक्षा किसी देष की सभ्यता, संस्कृति एवं विकास का मानदण्ड होती है। भारत की प्राचीनतम सभ्यता में मातृसत्ता को सर्वोच्च पद प्रदान किया जाना उस समाज में उन्नत स्त्री षिक्षा का सूचक माना जा सकता है। वैदिक साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है, कि प्राचीन समय में स्त्रियों की षिक्षा सम्बन्धी व्यवस्था उन्नत थी। स्त्रियों को पुरुष के समान शैक्षणिक अधिकार एवं सुविधायें प्राप्त थीं। वैदिक साहित्य में स्त्री को षिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था। जो वातावरण हमारे वैदिक साहित्य में स्त्रियों को मिला था वही वातावरण वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नितान्त आवष्यक है, क्योंकि किसी भी राष्ट्र की उन्नति आधी आबादी (स्त्रियों) को षिक्षित किये बिना सम्भव नहीं है।

°°

HG3

स्त्री शिक्षा, भारतीय संदर्भ में

गुरमीत कौर, भिलाई

भारत में स्त्री शिक्षा का प्रावधान प्राचीन काल से ही रहा हैं अनुसूइया, गार्गी जैसी विदूषी नरियाँ इस तथ्य को प्रमाणित करती हैं। समय के साथ-साथ देश में परिवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप स्त्री-शिक्षा के अधिकार में कमी और बढ़ोत्तरी होती रही।

वैदिक काल में भारतीय समाज में स्त्री को पुरूषों के समान शिक्षा, धर्म, राजनीति और संपत्ति के समान अधिकार प्राप्त थे। लेकिन उत्तर वैदिक काल में 16 से 18 वीं शताब्दी तक महिलाओं की स्थिति में गिरावट आने लगी। बौद्ध काल में स्त्रियों का स्थान पुरूषों से निम्न हो गया और साधारण वर्ग की स्त्रियों को शिक्षा के अधिकार से वंचित कर कुलीन और व्यवसायिक वर्ग की स्त्रियों की शिक्षा को प्रोत्साहन दिया गया।

मुगल काल में पर्दा प्रथा के प्रचलन के कारण स्त्रियाँ शिक्षा से वंचित रही। शाही घरानों की लड़कियाँ अपने घरों में ही शिक्षा प्राप्त करती थी। और हिन्दू घरानों की लड़कियाँ लड़कों के साथ ही शिक्षा प्राप्त करती थी। ब्रिटिश काल में भी स्त्री को शिक्षा से दूर ही रखा गया उनके अनुसार स्त्री शिक्षित होकर अपनी स्वतंत्रता व अधिकारों का प्रयोग करने लगेगी। राजा राम मोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, महात्मा गांधी, ज्योतिबा फूले, बाबा साहेब अम्बेडकर ने स्त्रियों के हक में लड़ाई लड़ी। पंच वर्षीय योजनाओं के माध्यम से स्त्रियों को आगे बढ़ाने हेतु कई कार्यक्रम निर्धारित किए गए जिसका फायदा उठाते हुए स्त्रियों ने महत्वपूर्ण कार्य किए है। इसके साथ ही पालकों की विचार धाराएं भी बदलने लगी, और वे अपनी बेटियों को घर से दूर शिक्षा प्राप्ती हेतु भेजने लगे । अतः मैं यह कह सकती हूँ कि एक प्रजातांत्रिक राष्ट्र के लिए स्त्री शिक्षा आवश्यक हैं,और भारत में इसके लिए अपार सुविधाएँ प्राप्त है। जिसका लाभ उठाते हुए देश की प्रशासनिक व्यवस्था में स्त्रियों ने महत्वपूर्ण पद संभाल कर देश हित में महत्वपूर्ण काम किए है।

°°°

HI1

कल्याणकारी योजनाओं से स्त्री शिक्षा का बदलता स्तर

इन्दु कुमारी, दर्शनशास्त्र–विभाग, नारी शिक्षा निकेतन स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ।

स्त्री और पुरूष दोनों समाज रूपी रथ के दो पहियें हैं, अतः स्पष्ट है कि बिना स्त्री शिक्षा के समाज की प्रगति असम्भव हैं। बालिका को समाज में हम वह दर्जा नहीं दे पाते जो बालक को दिया जाता है। वैदिक काल से ही प्रत्येक दम्पत्ति पुत्र प्राप्ति की उत्कठ लालसा रखता रहा हैं, अब तो भ्रूण परीक्षण द्वारा लोग पहले से आश्वस्त हो जाना चाहते है। जन्म के बाद भी प्रायः लोग बालक– बालिका के लालन–पालन में भेद बुद्धि रखते है। यह भेद या विषमता उनकी शिक्षा में भी दृष्टिगोचर होता है। समाज के कुछ वर्ग तो उन्हें पढ़ाना ही नहीं चाहते है।

स्त्री राष्ट्र की संस्कृति, धर्म, साहित्य, काल एवं ज्ञान–विज्ञान की स्तम्भ होती है, उसे शिक्षित बनाकर ही उसकी सृजनात्मक क्रियाशीलताओं को समुन्नत बनाया जा सकता है। स्त्री शिक्षा के अभाव में हमारा प्रजातन्त्रात्मक समाज पंगु बना रहेगा और हम प्रजातन्त्रात्मक आदर्शों को सच्चे अर्थों में कभी प्राप्त नहीं कर सकते। भारत एवं उत्तर प्रदेश सरकार ने स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु कई कल्याणकारी योजनाओं को लागू किया है। प्रस्तुत पत्र में बाराबंकी के टिकैतगंज गॉव में इन योजनाओं के फलस्वरूप स्त्री शिक्षा के स्तर में जो परिवर्तन आया है उसी का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

°°°

HJ1

माध्यमिक स्तर पर विद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता के सुधार में शिक्षक–अभिभावक संघ की भूमिका का अध्ययन

1. जया शुक्ला, 2. चेतना पाण्डेय,

शिक्षा शास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

विद्यालय समाज के निर्माण एवं विकास में सक्रिय भूमिका का निर्वाह करता है। विद्यालय प्रशासन तभी प्रभावी हो सकता है जब वहाँ के सभी मानवीय तत्वों में सहयोग एवं समन्वय की भावना हो। अतः विद्यालय से सम्बद्ध प्रत्येक मानवीय तत्व को इस बात को स्पष्ट रूप से समझना आवश्यक है कि विद्यालय की उन्नति तथा विकास में उनकी कितनी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस सन्दर्भ में शिक्षक – अभिभावक संघ के माध्यम से शिक्षक वर्ग एवं अभिभावक वर्ग मानवीय तत्व के प्रतिनिधि के रूप में अपने प्रयास एवं कार्यो से विद्यालय की कार्यप्रणाली के सुधार एवं विकास में

प्रत्यक्ष एवं सक्रिय योगदान कर सकता है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि विद्यालय की उपयोगिता पर्याप्त सीमा तक घर तथा उसके सम्बन्धों की घनिष्ठता पर निर्भर है। स्पष्ट है कि शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में शिक्षक, अभिभावक आदि मानवीय तत्वों की भूमिका महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। इसी व्यापक उद्देश्य की पूर्ति हेतु शिक्षक–अभिभावक संघ की संकल्पना विकसित हुई।

विद्यालयी शिक्षा में अभिभावकों तथा शिक्षकों का सम्मिलन उसमें अध्ययनरत् शिक्षार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है तथा वहाँ दी जाने वाली शिक्षा को महत्वपूर्ण बनाता है। शिक्षक–अभिभावक संघ एक ऐसा ही संगठन है जो विद्यालय की कार्यप्रणाली तथा उसके विकास में अपना योगदान दे सकता है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ती ने इसी सन्दर्भ में शिक्षक–अभिभावक संघ की भूमिका का अध्ययन करने का प्रयास किया है।

°°°

HJ2
अध्यापक शिक्षा में मूल्यों की उपादेयता

1. ज्योत्सना सक्सेना डी. डब्लू. टी.पी.जी कालेज देहरादून
2. मुकेश कुमार दुबे, नारायन स्वामी कालेज, देहरादून

वर्तमान शिक्षा जगत में मूल्यपरक शिक्षा की अपेक्षा करना दिवास्वप्न के समान है। वर्तमान अध्यापक शिक्षा में ही जब मूल्यों का कोई स्थान नहीं है तो उसके द्वारा प्रदत्त शिक्षा में मूल्यों के समावेश होने की कल्पना बेकार है। अध्यापक शिक्षा में निजीकरण शिक्षा का व्यवसायीकरण ही है। इसी कारण यह शिक्षा भी भ्रष्टाचार व पैसे के अधीन ही कार्य कर रही है। अनेकों संस्कारवार योग्य व्यक्ति शिक्षक बनने का स्वप्न देखते–देखते किसी दूसरे क्षेत्र में जाने को मजबूर हो जाते हैं तथा अध्यापक बनते ही अभिवृत्ति न रखने वाले व्यक्ति अपने शक्ति सामर्थ्य के बल पर शिक्षक आसानी से बन जाते हैं। छात्र ट्यूशन, सस्ती निम्नस्तरीय पुस्तकें, जिनमें परीक्षा उत्तीर्ण करने हेतु सामग्री उपलब्ध होती है पर गुणवत्ता अति निम्न कोटि की होती है जैसी बैसाखियों का सहारा लेकर उच्चतम डिग्री प्राप्त करना चाह रहे हैं और कर भी रहे हैं।

मूल्य विकास में सर्वप्रथम शिक्षक में ही मूल्यों का विकास व भावना तथा संवेदना का संचार करना अत्यावश्यक है। इस हेतु हमें अध्यापक शिक्षा को मूल्यों द्वारा अभिसिंचित करना होगा। शिक्षक छात्रों को यह शिक्षा पाठ्यविषयों द्वारा ही प्रदान करेगा। इसके लिए अलग से पाठ्यक्रम की आवश्यकता नहीं है। विषयों के विभिन्न प्रकरणों का पाठन भावात्मक रूप से किया जा सकता है।

°°°

HK1
स्त्री शिक्षा : गुणवत्ता एवं प्रशासन की भूमिका

कल्पना वर्मा, रामा डिग्री कालेज, चिनहट, लखनऊ

किसी भी समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए स्त्री शिक्षा का विशेष महत्व है। किसी भी शिक्षित समाज की वास्तविक स्थिति जानने के लिए यह आवश्यक है कि हम यह जानने का प्रयास करें कि समाज में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति कैसी है उनको क्या–क्या अधिकार प्राप्त हुए है और उनकी मूलभूत संसाधनों तक कितनी पहुॅच है तथा राजनीतिक या सामाजिक निर्णय निर्माण की प्रकिया में उनकी कितनी सहभागिता है। देखा जाए तो महिलाओ की शिक्षा विकास का एक प्रकार संकेतक भी है क्योकि शिक्षा विकास का एक महत्वपूर्ण कारक है जिसनें महिलाओं का स्तर और उनकी समाज में भूमिका को उठाने में मदद की है।

शिक्षा में गुणवत्ता का अर्थ है – मानक स्तर की शिक्षा। दूसरे शब्दों में महिलाओं अपनी रूचि आयु, योग्यता एवं स्तर के अनुरूप शिक्षा प्राप्त करें। जिससे समाज उनसे आशा करता है। गुणवत्ता परक शिक्षा से तात्पर्य है कि उनमें ऐसे कौशल उत्पन्न किये जाये जिसकी मदद से वे इस भूमि मण्डलीकरण के युग में ज्ञानार्जन करते हुए व्यक्तितव का विकास कर सकें और आत्मनिर्भर एवं सशक्त बन सकें।

महिला शिक्षा की गुणवत्ता में प्रशासन का अहम भूमिका है क्योकि गुणवत्ता युक्त शिक्षा के मानक तथ्य करने का कार्य प्रशानसन का है तथा उसकी जॉच कर उसे सुनिश्चीत करने का कार्य भी प्रशासन का हैं। सिर्फ कागजी आकंडो को हम स्त्री शिक्षा में गुणवत्ता नही कह सकते इसके लिए आवश्यकता है विभिन्न शैक्षिक क्षेत्रों में जैसे– चिकित्सा, शिक्षा, कृपि, विज्ञान, व्यवसाय, प्रशासन इंजीनियरिंग आदि में प्रशाासन द्वारा उन मानको का निर्धारण करना होगा जिससे कि महिलाएं ज्ञानार्जन कर सके एवं सशक्त बन कर इस सार्वभौमिकरण के युग में आत्म – सम्मान के साथ जी सके।

°°°

HK2
प्राथमिक शिक्षा में मूल्यों की चिन्ताएं

कंचन गुप्ता, शिक्षाशास्त्र, लखनऊ विश्वविद्यालय।

शिक्षा के विभिन्न स्तरों में प्राथमिक शिक्षा विकास के उद्देश्यों में उस माँ के समान है जो अंगुली पकड़कर बच्चे को न केवल चलना सिखाती है बल्कि प्रथम बार में उसमें आत्मविश्वास और चेतना को भी जागृत करती है। इसी सन्दर्भ में गाँधी जी का वाक्य याद आता है कि ''**शिक्षा से मेरा अभिप्राय मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के गुणों का सर्वांगीण विकास करना है।**'' इसी सबको ध्यान में रखते हुए सरकार ने संवैधानिक प्रावधान के रूप में चिन्हित करके शिक्षा को अनिवार्य बनाने का प्रयास किया है जो 86वें संविधान संशोधन 2002 द्वारा संविधान के भाग–4 में अनुच्छेद–45 के रूप में जोड़ा गया।

आज जब हम सम्पूर्ण भारत में प्रत्येक नागरिक तक शिक्षा पहुँचाने का स्वप्न देख रहे हैं तो हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि शिक्षा केवल '**कागजी**' न होकर मूल्यपरक भी हो। शिक्षा का अर्थ केवल रोजगार पाना ही न हो बल्कि मनुष्य का सर्वांगीण विकास हो ताकि हर नागरिक में सही और गलत के मध्य अन्तर करने की समझ विकसित हो।

°°

HK3
शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता

कविता वर्मा, कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर (छत्तीसगढ़)

षिक्षा किसी भी समाज की प्रगति का दर्पण है। कोठारी कमीषन ने अपनी रिपोर्ट का आरंभ इस कथन से किया है कि ''भारत के भाग्य का निर्माण देष के कक्षा कक्ष में किया जाता है।'' निःसंदेह देष के विकास में षिक्षा की अहम् भूमिका है एवं उत्तम षिक्षा कार्यक्रम का निर्धारण अध्यापकों द्वारा होता है।

अध्यापक षिक्षा गुणवत्ता युक्त हो इसके लिए जिम्मेदार
संस्था को अपनी भूमिका का निर्वाह ईमानदारी से किया जाना चाहिए। राश्ट्रीय अध्यापक षिक्षा परिशद एवं विष्वविद्यालय में तालमेल होना चाहिए तथा षिक्षा महाविद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण अध्यापक षिक्षा की व्यवस्था हो इसके लिए निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखा जाना चाहिए–

' षिक्षक षिक्षा संस्थान के लिए एक अलग से विष्वविद्यालय होने चाहिए जहाँ षैक्षिक अनुसंधान की उत्कृश्ठ व्यवस्था हो।

' कुषल, प्रतिबद्ध एवं भारतीय संस्कृति के षाष्वत मूल्यों से युक्त षिक्षकों की प्रषिक्षण किस प्रकार हो यह सुनिष्चित किया जाना चाहिए तथा अध्यापक षिक्षा के विभिन्न स्तरों जैसे प्राथमिक, माध्यमिक एवं षिक्षा महाविद्यालयों के प्रषिक्षण संस्थाओं में परस्पर सहयोग एवं तालमेल होना चाहिए। षिक्षक प्रषिक्षार्थियों की प्रषिक्षण स्तर के अनुरूप षैक्षणिक संस्थाओं में उनकी खपत होने की संभावनाओं को मांग एवं आपूर्ति व्यवस्था के तहत लाकर राश्ट्रीय एवं राज्य स्तरों पर प्रषिक्षित बेरोजगारों की संख्या घटायी जानी चाहिए।

अध्यापक षिक्षा की गुणवत्ता पर निरन्तर लग रहे प्रष्न चिन्ह आज की षैक्षणिक व्यवस्था में चिंता का विशय है। ऐसी दषा में राश्ट्रीय अध्यापक षिक्षा परिशद से हमारी आषाएँ एवं अपेक्षाएँ बढ़ रही है।

°°

HK4
प्राथमिक स्तर पर गुणवत्तापूर्ण पर्यावरण–षिक्षा : संरचनात्मक उपागम

1. कुमकुम श्रीवास्तव 2. रत्नर्तुः मिश्रा, षिक्षाषास्त्र विभाग, लखनऊ विष्वविद्यालय

यह प्रपत्र संरचनात्मक उपागम के परिप्रेक्ष्य में प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण षिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाने के सन्दर्भ में प्रस्तुत है। संज्ञानात्मक तथा समाज–मनोविज्ञान के क्षेत्रों में हुए अनुसन्धान कार्यों द्वारा इंगित हुआ कि अधिगम एक सक्रिय प्रक्रिया है जिसमें अधिगमकर्ता अपने तत्कालीन एवं पूर्व ज्ञान के आधार पर नये विचारों या सम्प्रत्ययों का निर्माण करता है। अर्थपूर्ण सीखना तभी सार्थक होता है जब व्यक्ति वर्तमान सूचनाओं के आधार पर नये विचार एवं ज्ञान की रचना कर लेता है। किसी समस्या का समाधान खोजने तथा असन्तुलन की स्थिति को समाप्त

करने की प्रक्रिया में नये ज्ञान के निर्माण को पियाजे एवं अन्य सम्बन्धित मनोवैज्ञानिकों तथा अध्यापकों द्वारा संरचनावाद कहा गया है (ब्लेस, 1988, ब्रुक्स, 1990, व्हीटले, 1991)। इस विचार के अनुसार अधिगम संसार की व्यक्तिगत व्याख्या है (मेरिल, 1991)।

प्रत्येक बालक का अपना प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण होता है जहॉ से वह अपने दैनिक अनुभव प्राप्त करता है। बालक के इन्हीं अनुभवों का उपयोग करते हुए पर्यावरण षिक्षा को अधिक गुणवत्तापूर्ण एवं प्रभावी बनाया जा सकता है। प्रस्तुत प्रपत्र में परम्परागत उपागम तथा संरचनात्मक उपागम पर आधारित षिक्षण में अन्तर तथा संरचनात्मक उपागम के सिद्धान्तों और उनके अनुप्रयोग के आधार पर प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण–षिक्षा की प्रक्रिया के अपेक्षित स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है।

°°

HM1

प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में महात्मा ज्योतिराव फूले का योगदान

ममता गंगवार, इतिहास विभाग, महिला महाविद्यालय, किदवई नगर, कानपुर

"विद्येबिना मति गेली, मतीबिना नीति गेली, नीतीबिना गति गेली ।
गतीबिना वित्त गेले, वित्तबिना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले ।।"

शेतकन्याचा असूड (किसान का कोड़ा) में प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से विद्या के महत्व को बताने वाले निर्बलों के मसीहा, व्यक्तित्व के धनी, कर्मयोगी, युगप्रवर्तक, महात्मा की उपाधि प्राप्त करने वाले सामाजिक क्रान्ति के प्रणेता महात्मा ज्योतिराव फूले महाराष्ट्र के पूना में जन्मे थे । अमेरिकी लेखक थॉमस पेन की रचना राइट्स ऑफ मैन, धाय माँ सगुणाबाई तथा ईसाई मिशनरियों के सेवा–भाव से प्रभावित होकर उन्होंने शोषित–पीड़ित वर्ग – शूद्र–अतिशूद्र तथा महिलाओं के उत्थान हेतु निःस्वार्थ भाव से सुधार आन्दोलन चलाया तथा उनकी दयनीय स्थिति के लिए अशिक्षा को उत्तरदायी ठहराया । परम्परावादी व रूढ़िवादी समाज से संघर्ष करते हुए सन् 1848–1852 के अल्पकाल में ही 18 पाठशालाएँ खोलीं तथा पत्नी सावित्रीबाई फूले को आधुनिक भारत की प्रथम शिक्षिका बनाया । महात्मा फूले की शैक्षिक सेवाओं से प्रसन्न हो सरकार ने 1852 में उन्हें सम्मानित किया तथा "दक्षिणा प्राइज कमेटी" के माध्यम से सरकार ने बालिकाओं के स्कूल हेतु 75 रूपये प्रति माह आर्थिक अनुदान तथा 1853 में उनके द्वारा खोली गई अस्पृश्य हिन्दू पाठशाला हेतु 25 रू0 प्रतिमाह अनुदान स्वीकृत किया गया । सन् 1855 में दिन में काम करने वाले स्त्री–पुरुषों हेतु रात्रि पाठशालाएँ खोलीं । 1882 में "हन्टर कमीशन" के समक्ष 12 वर्ष तक के बालक–बालिकाओं हेतु निःशुल्क व अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का प्रतिवेदन दिया तथा सरकार से अपील की कि वह वास्तव में प्रजा कल्याण चाहती है तो ग्रामों में फैले हुए किसानों और कनिष्ठों को प्राथमिक शिक्षा दी जानी चाहिए।

°°

HM2

प्रभावी अध्यापन के आधार

मुदिता चन्द्रा हिन्दी विभाग, जमषेदपुर वोमेन कालेज, जमषेदपुंर

षिक्षा मानव मन–मस्तिश्क को परिश्कृत परिमार्जित कर उसे स्व के दायरे से बाहर निकाल कर उस व्यापक धरातल पर ले जाती है, जहाँ पहुँच कर मनुश्य के मन में निहित अपने–पराये की भावना का तिरोभाव हो जाता है और उसे सारा संसार अपना परिवार लगने लगता है । भगवान षंकराचार्य ने भी कहा है –''सा विद्या ब्रह्मषक्ति प्रदा'' अर्थात् षिक्षा वही है जो व्यक्ति को ब्रहम की स्थिति में पहुंचा दे । षिक्षा षब्द 'षिक्ष' धातु से बना है । जिसका अर्थ है – 'देना' । यानी ज्ञानी एवं अज्ञानी, गुरू एवं षिश्य के बीच सुव्यवस्थित लेन–देन की प्रक्रिया को षिक्षा माना गया है। विद्यार्थियों में निहित षक्तियों या क्षमताओं को उत्तेजित कर उन्हें सही दिषा में विकसित करने की प्रक्रिया ही षिक्षा है।

षिक्षा सही अर्थो में एक बहुआयामी सम्प्रत्यय (Multi Daimension Concept) है । इसके अनेक पक्ष या पहलू है जैसे – षिक्षण (Learning), अध्यापन (Teaching), अध्यापन विधि (Teaching Method), वैयक्तिक विभिन्नता (Individual Difference) इत्यादि । विद्यार्थी का सर्वागीण विकास ही षिक्षा का उद्देष्य है और इस उद्देष्य को प्राप्त करने हेतु जिन–जिन तत्वों या क्षेत्रों से सहायता मिलती है सब के प्रति सचेत रहने की जितनी आवष्यकता है विद्यार्थी को है उतनी ही षिक्षक को भी षिक्षक प्रभाविता का तात्पर्य षिक्षक की कार्य क्षमता से है किन–किन पहलूओं पर विषेश ध्यान देकर एक षिक्षक प्रभावी अध्यापन करने में सफल होगा इन्हीं विन्दुओं पर इस लेख में विचार किया गया है ।

°°

HM3
शिक्षा अधिकार अधिनियम में गुणवत्ता का चिन्तन

1. मयंक कुमार 2. दनेश कुमार, शक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

आदिकाल से ही मानव जाति स्वभावगत अपने लिए उत्कर्ष के मार्ग तलाश करती आ रही है। अपने जीवन को उच्च स्तर प्रदान करने के लिए उसकी प्रत्येक गतिविधि उद्‌देश्यपूर्ण गुणवत्ता की प्राप्ति पर आधारित रही है। इसलिए वह जीवन के प्रत्येक प्रयास द्वारा निरंतर गुणवत्ता और उच्चतम लक्ष्यों की ओर अग्रसर रहा है। गुणवत्ता के अर्थ का विश्लेषण करने से यह तथ्य प्रकट होता है कि गुणवत्ता का संबंध वस्तु/सेवा के उपभोक्तावादी गुणों से है। उदारीकरण, निजीकरण व भूमण्डलीकरण के प्रभावों के चलते वर्तमान युग को 'गुणवत्ता प्रबन्धन का युग' कहना अतिशयोक्ति न होगा। 11वीं पंचवर्षीय योजना में 'समावेश' शब्द विकास के मूलमंत्र के रूप में स्वीकार किया गया है। समावेशी विकास के लिए, सभी के लिए शिक्षा से भी अधिक महत्वपूर्ण योगदान भला किस का हो सकता है। उत्तम और समग्र शिक्षा लोगों को सशक्त बनाती है। अतएव इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु गुणवत्तायुक्त शिक्षा में निवेश नितांत आवश्यक है। शिक्षा की प्रमुख समस्याओं में से एक है, इसकी अति निम्न गुणवत्ता। इसे बढ़ाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण उपाय है, न्यूनतम मानकों का निर्माण कर उसे सभी विद्यालयों में लागू करना। शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 की अनुसूची में कुछ मानकों का निर्धारण किया जाना एक सकारात्मक कदम है। प्रस्तुत शोधपत्र में शिक्षा अधिकार अधिनियम के प्रमुख प्रावधानों, 6–14 आयुवर्ग हेतु निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा, शिक्षकों का प्रशिक्षण, विद्यालय भवनों व शिक्षक–छात्र अनुपात में सुधार, शिक्षकों के कार्य घंटों के लिए मानक, जनगणना, चुनाव कार्य, आपदा राहत के अतिरिक्त अन्य कार्यो पर रोक तथा स्कूलों द्वारा दान/चंदा स्वरूप धन लेने के लिए दण्ड तथा निजी विद्यालयों हेतु आस–पास के वंचित बच्चों को 25 प्रतिशत सीटों पर प्रवेश देना आदि पर गुणवत्तापरक दृष्टि से प्रकाश डाला गया है।

°°

HN1
ग्रामीण परिषदीय विद्यालयों के छात्रों का पाठ्यक्रम के संदर्भ में निम्न उपलब्धि स्तर–कारण एवं निवारण।

नीतू यादव, VBTC

आधुनिक भारतीय शिक्षा व्यवस्था में छात्र एवं शिक्षक के अतिरिक्त तीसरा महत्वपूर्ण घटक पाठ्यक्रम है। यद्यपि प्रारंभ से ही शिक्षा में पाठ्यक्रम निर्धारण का प्रचलन रहा है, किन्तु आज की तरह पाठ्यक्रम निर्माण की व्यवस्था इतनी केन्द्रीकृत नहीं थी।

प्रस्तुत शोध पत्र में केन्द्रीकृत व्यवस्था द्वारा निर्मित पाठ्यक्रम का ग्रामीण अंचल का विद्यार्थियों के लिए औचित्य की विवेचना करने का प्रयास किया जा रहा है। पाठ्यचर्या की विवेचना छात्रों के सामाजिक आर्थिक पारिवारिक तथा विद्यालयी परिवेश के संदर्भ में की जा रही है।

ग्रामीण परिषदीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की पाठ्यचर्या के विभिन्न विषयों यथा हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, संस्कृत के सन्दर्भ में अपेक्षित उपलब्धि स्तरों से अत्यंत निम्न हैं। अतः उपलब्धि स्तर के निम्न होने के कारणों को जानने एवं उसमें सुधार लाने हेतु आवश्यक सुझाव भी देने का प्रयास किया गया है।

°°

HP1
उच्च शिक्षा में गुणवत्ता

पारूल मिश्रा,, शिक्षाशास्त्र विभाग, एन.ए.के.पी. पी. जी. कालेज, फर्रुखाबाद।

उच्च शिक्षा व्यक्तित्व विकास तथा चरित्र निर्माण का वह अतिंम औपचारिक पड़ाव है जिसको पार कर विद्यार्थी वास्तविक जीवन में प्रवेश कर एक वास्तविक सामाजिक प्राणी के रूप में जीवन प्रारम्भ करता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उच्च शिक्षा का उद्‌देश्य न सिर्फ विद्यार्थी को ज्ञान प्रदान करना है अपितु यहॉ उसके व्यक्तित्व को अंतिम रूप प्रदान करने कर उत्तम कार्य भी किया जाना चाहियें। परन्तु आज उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कई विसंगतियॉ सामने आ रही

हैं जो इसके उत्तरदायित्व के निर्वहन पर प्रश्न चिंह लगा रही है, सबसे दुःखद बात तो यह है कि उद्देश्य निर्धारण से लेकर मूल्यांकन तक इन विसंगतियों से उच्च शिक्षा का कोई भी पक्ष अछूता नही है।

ऐसे में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता एक सबसे बड़ी चुनौती है निःसन्देह यह गर्व की बात है कि भारत में उच्च शिक्षा के लिये लगभग 348 विश्वविद्यालय, 17625 महाविद्यालय हैं जिनमें लगभग 10.5 करोड़ छात्र अध्ययन करते हैं तथा इनकी संख्या प्रतिवर्ष बढ़ ही रही है। परन्तु यह प्रश्न भी उतना ही अधिक विचारणीय है कि क्या इतनी बड़ी व्यवस्था के बाद भी हम उद्देश्यों को प्राप्त कर पायें है। मात्रात्मक विकास के साथ–साथ गुणात्मक विकास भी बहुत महत्वपूर्ण है इस विषय पर गहन चर्चा की आवश्यकता है।

°°

HP2
षिक्षक षिक्षा – एक गुणात्मक पहलू

1. प्रभा चौधरी, **2.** रेखा शुक्ला, एस0एन0जी0पी0जी0कालेज उन्नाव

'' वास्तव में षिक्षक वही है, जो बच्चों को सीखने की कला सिखाये, ज्ञान की पिपासा उनमें जागृत करे'' – वर्तमान शैक्षिक परिदृष्य में षिक्षण, अनुसंधान, मूल्यांकन और प्रबन्धन के क्षेत्रा में संख्यात्मक पहलू की तुलना में गुणात्मक पहलू पर अधिक जोर दिया जा रहा है। षिक्षा की गुणवत्ता षिक्षक के ऊपर निर्भर करती है। जब षिक्षक गुणों से परिपूर्ण होगा तब षिक्षा में भी गुणवत्ता होगी। श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है कि ''एक दीपक दूसरे दीपक को तब तक प्रज्जवलित नही कर सकता तब तक वह स्वयं दीप्तिमान न हो''।

अतः षिक्षक ही षिक्षा की धुरी है जो छात्रों के मस्तिष्क को सर्वोच्च गुणों से परिपूर्ण कर सकता है। षिक्षक को स्वाअध्ययन और स्वाअधिगम के द्वारा आधुनिक ज्ञान को प्राप्त करने की जिज्ञासा में प्रयासरत रहना चाहिए ताकि समुदाय की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आवष्यकताओं के अनुकूल अपने पाठ्यक्रय के माध्यम से स्कूल कार्यक्रम का आयोजन कर सके।

स्वतंन्त्राता के पूर्व विभिन्न आयोगों ने षिक्षक प्रषिक्षण को महत्व दिया। विभिन्न स्तरों (प्राथमिक से उच्च स्तर) तक प्रषिक्षण कार्यक्रमों में षिक्षक ही प्रमुख था परन्तु स्वतंत्राता के पष्चात् षिक्षक षिक्षा पर विषेष ध्यान दिया गया। पंचवर्षीय योजनाओं में षिक्षक षिक्षा के विस्तार गुणवत्ता सुधार के साथ –साथ उन्हे पर्याप्त धनराषि भी आवंटित की गयी इसी समय विभिन्न षिक्षा आयोगों (विष्व विद्यालय षिक्षा आयोग 1948 – 49, माध्यमिक षिक्षा आयोग 1952 – 53, भारतीय षिक्षा आयोग 1964) का गठन किया गया। प्रत्येक आयोग ने षिक्षकों की गुणवत्ता पर अपने सुझाव दिये। 1995 में षिक्षकों के स्तर को सुधारने के लिए राष्ट्रीय अध्यापक षिक्षा परिषद का गठन किया गया।

°°

HP3
प्राथमिक शिक्षा में गुणात्मक सुधार : एक समीक्षा

प्रतिभा श्रीवास्तव,, मुंशी रघुनन्दन प्रसाद सरदार पटेल महिला, पी0जी0 कालेज, बाराबंकी

प्राथमिक शिक्षा पूरी शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला है जिसका प्रभाव शिक्षा के सभी स्तरों पर परिलक्षित होता है। यह जीवन की बुनियाद है जिस पर प्रगति की इमारत खड़ी की जा सकती है। प्राथमिक शिक्षा विकास के उद्देश्यों में उस माँ के समान है जो उंगली पकड़कर बच्चे को न केवल चलना सिखाती है बल्कि प्रथम बार उसमें आत्म विश्वास को रोपित करती है। प्रस्तुत शोध–पत्र में अग्रलिखित तीन मुख्य बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है। शैक्षिक अवसरों की समानता, समेकित बालकों की शिक्षा, विशिष्ट बालकों की शिक्षा, प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों में शिक्षण कौशलों एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम पर प्रकाश डाला गया है। शैक्षिक अवसरों की समानता के अन्तर्गत सरकारी प्राथमिक विद्यालयों एवं कान्वेंट विद्यालयों के पाठ्यक्रम शिक्षण विधियों तथा आधारभूत सुविधाओं पर प्रकाश डाला गया है। विशिष्टि बालकों हेतु किये गये प्रयासों एवं तत्सम्बन्धी सुझावों को सम्मिलित किया गया है। अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम के अर्न्तगत सेवापूर्व एवं सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम से सम्बन्धित समस्यायें तथा सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं।

°°

HP4
उच्च प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में लैंगिक समानता संबंधी परिवर्तन

प्रतीक्षा वर्मा, एल0एम0पी0वी0 गर्ल्स पी0जी0 कॉलेज गोसाईगंज लखनऊ

पाठ्यक्रम ही वह साधन है, जिसमें समस्त षैक्षिक अनुभव सम्मिलित होते हैं, जो बालक की आवष्यकताओं के अनुसार षिक्षा के उद्देष्य को प्राप्त करने में सहायता देते हैं। पाठ्यक्रम सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितयों से प्रभावित होता है। प्राचीन तथा मध्यकाल में पाठ्य विशय को विषेश महत्व दिया गया। पाठ्यसामग्री द्वारा बालक को आदर्ष नागरिक के रूप में विकसित किया जाता है। पाठ्यविशय समाज का प्रतिबिम्ब होते हैं तथा यह विशय सामग्री समाज को निर्देषित करती ळें। यदि पाठ्यक्रम स्त्री–पुरूश लिंगभेद पर आधारित होगा तो समाज का चिन्तन भी विरोधी व भेदभव पूर्ण होगा। इसी सामाजिक विभेदकारी नीति का परिणाम है गिरता लैंगिक अनुपात। स्त्री–पुरूश लिंगभेद से ही असन्तोशजनक लिंगानुपात का जन्म हुआ है। लिंगानुपात के अधिकान्षतः कारण पितृसत्तामक रूढ़िवादी सोच को पुश्ट करने वाले हैं। अतः महिलाओं के प्रति समानता व उनकी स्थित में सुधार हेतु बेसिक षैक्षिक पाठ्यक्रम लैंगिक समानता पर आधारित होना चाहिए।

हिन्दी भाशा पुस्तक मंजरी तथा इतिहास व नागरिक जीवन पुस्तक में सुझाव के अनुसार यदि संषोधन किये जाएं तो पाठ्यसामग्री में व्याप्त लैंगिक असमानता को दूर किया जा सकता है। जिससे भारतीय समाज समतामूलक बन सके। स्त्री–पुरूश एक दूसरे के व्यक्तित्व व कृतित्व का सम्मान कर एक दूसरे की प्रगति में सहायक हों। तभी लिंगानुपात भी संतुलित हो सकेगा। जिससे समाज में सामाजिक न्याय व सामाजिक समरसता की स्थापना हो पायेगी।

°°

HP5
सर्व शिक्षा अभियान–एक आलोचनात्मक विश्लेषण

1. प्रीति जैसवार 2. रचना सान्याल, षिक्षा विभाग, लखनऊ विष्वविद्यालय , लखनऊ।

प्राथमिक शिक्षा आज भारतीयों का मौलिक अधिकार बन गया है, स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत में सभी के लिए शिक्षा की पहल एक महत्वपूर्ण कदम रहा है। भारत में सभी को शिक्षा को उपलब्ध कराने के उद्देश्य की पूर्ति हेतु विगत 62 वर्षो की अवधि में सभी को गुणवत्तापरक शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए केन्द्र व राज्य दोनों ही सरकारों ने विभिन्न स्तर पर कई प्रयास किये, तथा उत्तरोत्तर अधिक धन खर्च किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने शिक्षा में बराबरी और सामाजिक न्याय को ध्यान में रखते हुए न केवल समाज के सभी वर्गो तक शिक्षा पहुँचाने के बात की, बल्कि उन्हें निरन्तर शिक्षा की प्रक्रिया में भी सम्मिलित करने की बात को स्वीकार करते हुए 21वीं शताब्दी प्रारम्भ होने से पहले ही 14 वर्ष तक के सभी बालक–बालिकाओं को अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया।

शिक्षा को जन–जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से प्रत्येक राज्य में 'जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम'(क्प्म्च), 17 मई, 1993 को उत्तर प्रदेश में 'सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद' तथा 2000–2001 में स्कूल चलो अभियान नामक योजना चलाई गई, साथ ही प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कई राज्यों में 'सर्व शिक्षा अभियान' नामक योजना शुरू की गई। किन्तु 2000–01 में चलाई गई योजना 'सर्व शिक्षा अभियान' के द्वारा प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन व उपस्थिति में वृद्धि के साथ–साथ, विद्यालय छोड़ने वाले बच्चों की दर में कमी तो आई है, किन्तु शिक्षा की गुणवत्ता में कोई विशेष सुधार दिखाई नही दे रहा है।

प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तर प्रदेश में 'सर्व शिक्षा अभियान' की वर्तमान स्थिति को दर्शाते हुए अभियान की सफलता–असफलता एवं शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु कुछ बिन्दु प्रस्तुत किये जायेंगे।

°°

HR1
षिक्षक षिक्षा में गुणात्मक सुधार

1. रमाशंकर पाण्डेय, अमर शहीद कंचन सिंह पी0जी0 कालेज, फतेहपुर
2. अमित कुमार, लखनऊ विष्व विद्यालय, लखनऊ

तैत्तिरीय उपनिषद में मात्रा देवी भव पितृ देवो भव के साथ आचार्य देवो भव कहकर षिक्षक का महत्व माता पिता के समानान्तर बताया गया है।

षिक्षक षिक्षा जगत में वह मेरूदण्ड है जो प्राथमिक षिक्षा, माध्यमिक षिक्षा, और उच्च षिक्षा की काया को आधार प्रदान करता है। इसमें सुधार के प्रयास पिछले कई वर्षों से किये जा रहे है। सुधार की इस कड़ी में राष्ट्रीय अध्यापक षिक्षा परिषद (एन0सी0टी0ई0) के नवीनतम प्रयासों के रूप में पत्यक्ष रूप से प्रस्तुत किया गया है।

एन0 सी0टी0 ई0 के सुझाव वर्तमान देषकालिक परिस्थितियों में नितान्त वैज्ञानिक एवं युक्तियुत है। जो षिक्षक षिक्षा के सुधार के लिए औषधि का कार्य कर रहे हैं। षिक्षक षिक्षा को विष्व स्तर पर गुणवत्ता की सम्पुष्टा से सम्बलित करने के लिए प्रस्तुत शोध पत्र में कतिपय सुझाव दिये गये हैं।

°°

HR2

महिला शिक्षा की प्रस्थिति

रामा यादव, शिक्षा संकाय, कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाईनगर, दुर्ग छतीसगढ़

जिस प्रकार मनु स्त्रियों को आदिपत्ति की वस्तु मानते थे तथा युधिष्ठिर द्वारा द्रोपदी को दाव पर लगाया गया था उससे तो यही सिद्ध होता है कि प्रारम्भिक युग में नारी को गुलाम तथा मूल्यावान प्रतिभूति (Chattel) ही माना जाता था। सम्प्रति स्वंतत्रता एवं शिक्षा के अधिकार के विषय में पक्षपात एवं व्यवहार किया जाता था। परन्तु स्त्री एवं पुत्री की रूप में उसे कुछ संरक्षण प्राप्त था। बौद्ध काल में धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में कुछ सूधार (भिक्षुणी संघ) हुआ, पर आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति में कोइ ं परिवर्तन नहीं हुआ।

परिवार में प्रारम्भ से ही बालकों को वरीयता मिलती है और वहीं बालिकाओं में सहनषीलता के बीज इसी उम्र से बोना प्रारम्भ कर दिया जाता है; आखिर उसे उम्र भर पुरूष प्रधान परिवार और समाज में ही तो रहना है। यह उसे पालतू बनाने की प्रक्रिया का प्रारम्भ है। उसे खुषी – खुषी खिलौना बनना सिखाया जाता है; और पर्दा होता है उसकी कोमलता का। परन्तु हम यह भूल जाते हैं कि नारीत्व और स्त्रीत्व कोमलता के पर्याय नहीं हैं जो इसकी अक्षुण्ता के लिये हम उसके जन्म से पूर्व ही चिन्तित हो उठते हैं। आप सुधी पाठक हैं और यह मेरे विचारों का प्रारम्भिक दौर है .... यदि सरलता से इन तथ्यों का पाचन संभव हुआ तो निष्चित ही विचार – विमर्ष का यह क्रम क्रमवत रहेगा और हम इक्कीसवीं सदी को स्त्री सदी नहीं तो कम से कम मानव सदी तो अवष्य कह सकेंगे।

°°

HR3

शिक्षा की गुंणवत्ता तथा रोजगारपरक शिक्षा : एक विष्लेशण

रश्मि श्रीवास्तव, हीरालाल यादव बालिका डिग्री कालेज, सरोजनी नगर, लखनऊ

भारत की वर्तमान षिक्षा व्यवस्था पर नजर डालने पर साफ पता चलता है कि हम अपने षिक्षण संस्थाओं द्वारा छात्र–छात्राओं को प्रदान की जाने वाली डिग्री को उनके रोजगार से जोड़ने में असफल रहे हैं। षिक्षा की गुणवत्ता की दृष्टि से अन्य अनेक मुद्दों के साथ यह मुद्दा प्रधान है। हम देखते हैं कि जीवन के अनेक वर्श विद्यालयों व महाविद्यालयों के बीच गुजार देने के बाद भी ऐसे तमाम बच्चे युवा और वयस्क हमारे बीच मैजूद हैं जिनकी षिक्षा उनके रोजगार का माध्यम नहीं बन सकी है। सैद्धान्तिक नीति–नियम रटाने की परिपाटी पर कायम है। हमारी वर्तमान षिक्षा पद्धति माध्यमिक, उच्च माध्यमिक तथा उच्च स्तरीय षिक्षा प्राप्त करने के बावजूद हमारे बच्चे को ऐसा कोई हुनर, ऐसा कोई तकनीकी ज्ञान नहीं दे पाती जिससे वे षिक्षा को अपनी मूल–भूत आवष्यकता की पूर्ति का साधन बना सके।

आज अति आवष्यक प्रतीत होता है कि हम अपने देष में षिक्षा की गुणवत्ता से सम्बन्धित विविध पहलुओं के प्रति जागरूक होने के साथ–साथ इस मुद्दे पर भी संवेदनषील हो। इस सन्दर्भ में निम्नांकित उपाय लाभप्रद हो सकते हैं।

1. चूँकि भारत एक कृशि प्रधान देष है और देष की अधिकांष जनता गांवों में रहती है अतः यहां की षिक्षा व्यवस्था में कृशि से सम्बन्धित व्यावसायिक एवं तकनीकी षिक्षा को अवष्य स्थान दिया जाना चाहिए।
2. वर्तमान युग भौतिकवादी युग है। जबकि देष में बड़ी संख्याओं मे षिक्षित युवा रोजगार की तलाष में प्रौढ़ हो जाते हैं। देष में स्थापित षिक्षा यदि बालकों को विभिन्न वैज्ञानिक तकनीकी ज्ञान का व्यवहारिक पक्ष भी बता सके तो ये युवा नौकरी खोजने की बजाए स्वयं का उद्योग स्थापित कर अपनी रोजी–रोटी चला सकेंगे और देष की उत्पादन क्षमता भी बढ़ा सकेंगे।
3. हमें अवष्य ही इस प्रकार की कार्य पद्धति पर आधारित पाठ्यक्रम का निर्माण करना होगा, जिससे प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, स्नातक तथा परास्नातक इन विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रमों के प्रत्येक स्तर को पूरा करने के पष्चात छात्र कोई ना कोई ऐसा हुनर ऐसी कार्यकुषलता जरूर सीख ले कि वह अपना जीवकोपार्जन कर सके।

°°

HR4

प्रारंभिक शिक्षा में गुणवत्ता के विषय : पाठ्यपुस्तकों में मूल्य शिक्षा का समावेशन

रश्मि चतुर्वेदी,,शिक्षा संकाय, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

स्वतंत्रता के बाद शिक्षा के सार्वभौमिक प्रसार के लिये जो सबसे बड़ा कार्य देश में हो रहा है वह है दस वर्षीय सर्वशिक्षा अभियान लगभग पाँच–सात वर्ष पूरे देश में जो मुहिम चली उसमें मुख्य जोर शिक्षा को पहुँच विहीन क्षेत्रों तक पहुँचाना, शाला भवन तथा ब्लैक बोर्ड जैसी मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराना, शालाओं में नामांकन दर बढ़ाना तथा शिक्षकों के प्रशिक्षण आदि करना तक रहा है। अब जब यह अभियान लगभग समापन की ओर है, मध्यावधि मूल्यांकनों में यह स्पष्ट हुआ है कि हजारों, करोड़ों रूपये इस अभियान में लगाने के बाद भी पांचवी कक्षा में सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे लाखों बच्चें अपना नाम भी ठीक से नही लिख पा रहे है। स्कूलों में पढ़कर निकलने वाले विद्यार्थियों में जीवन कौशलों का तो अभाव है ही। यह समझना आवश्यक है कि शिक्षा में वह कौन सा मूल तत्व नही दिया जा पा रहा है जो एक समझदार व राष्ट्रोपयोगी नागरिक का निर्माण करता है। सर्वशिक्षा अभियान के इन अंतिम दो–तीन वर्षों में शिक्षा शास्त्रियों का पूरा जोर शिक्षा में गुणवत्ता लाने पर केन्द्रित चल रहा है।

शिक्षण में गुणवत्ता के विषय विकसित अधोसंरचना; विद्यालय एवं कक्षा का वातावरण; अनुशासी तथा सहमार्गी प्रबंधन; पाठ्यचर्या के स्थल और अधिगम के संसाधन, शिक्षक की स्वतंत्रता और गुणवत्ता प्रबोधन तथा नवाचार को बढ़ावा एवं पर्यावरण व पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशील बनाया जाना माना जा सकता है।

°°

HR5
उच्च षिक्षा की गुणवत्ताः समस्या एवं समाधान

1. रष्मि प्रभा षुक्ला,,ए0 पी0 आई0 बिन्दवासिनी नगर, गोरखपुर
2. नम्रता द्विवेदी,,भालचन्द्र इन्स्टीटयूट ऑफ एजूकेषन एन्ड मैनेजमेन्ट, हरदोई रोड, लखनऊ

षिक्षा जीवन की अति महत्वपूर्ण प्रक्रिया होने के साथ सामाजीकरण का प्रभावी अभिकरण भी है । षिक्षा के द्वारा मनुष्य अपनी सभ्यता संस्कृति में निरन्तर विकास करता है । समाज परिवर्तनषील है और उसकी मान्यताएॅ एवं आवष्यकताएॅ सदैव बदलती रहती हैं । आज उच्च षिक्षा में व्यापक परिवर्तन हुए हैं । उन परिवर्तनों के कारण परम्परागत षिक्षा से अलग आवष्यकता आधारित षिक्षा का तेजी से विस्तार हुआ है ।आज भारत में उच्च षिक्षा का स्वरूप भिन्न है और इसका क्षेत्र व्यापक हो गया है । पिछले वर्षो में उच्च षिक्षा संस्थाओं में विद्यार्थियों की संख्या दुगुनी से भी अधिक हो गयी है । विष्वविद्यालयों पर बढता हुआ यह अतिभार उच्च षिक्षा की गुणवत्ता पर प्रष्नचिन्ह लगा रहा है जिसके प्रति सर्तकता आवष्यक है ।

अभी तक हमारे यहॉ गुणात्मक स्तर की अपेक्षा संख्यात्मक विस्तार पर अधिक बल दिया गया है । परिणामस्वरूप उच्च षिक्षण संस्थाओं जिनमें मानविकी व समाज विज्ञान, विज्ञान, तकनीकी विषय तथा इन्जीनियरिंग की षिक्षा के लिए तमाम षैक्षिक संस्थान खुल गये हैं । बिना किसी आवष्यक साधन एवं सुविधाओं के कालेजों की संख्या बढती गयी है तथा उनकी कार्य विधियों से षिक्षा का स्तर निम्नकोटि का बनता गया है । इसके साथ ही आर्थिक एवं अन्य साधनों की विकट समस्या हमारे सामने है । स्ववित्त पोषित कॉलेजों में गुणात्मक सुधार के लिए आवष्यक है कि सम्बद्ध विष्वविद्यालय का पूरा नियन्त्रण हो ।

°°

HR6
भारतीय उच्च शिक्षा : एक विहगंम दृष्टि

1. रीतू तिवारी 2. निशी त्रिपाठी, शशि भूषण गर्ल्स डिग्री कालेज

भारतीय उच्च शिक्षा तंत्र विश्व का तीसरा बड़ा उच्च शिक्षा यंत्र है। विगत 50 वर्षो में देश के विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों विद्यार्थियों एव शिक्षकों की संख्या में कमशः 11.6 गुना, 12.5 गुना 6.0 गुना एवं 5.0 गुना वृद्धि अवश्य हुई है। इन आंकडों पर गौर करे तो पायेंगे कि उच्च शिक्षा का विस्तार अवश्य हुआ है पर उसका विकास सही दिशा की ओर बढ़ रहा है या नही? एक विचारणीय विषय है।

भारत में 9278 महाविद्यालय व 260 विश्वविद्यालय है पर इतनी संख्या में कितने विश्वविद्यालय है जो उच्च शिक्षा के वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल रहे है? यह बुद्धिजीवियों के समक्ष यक्ष प्रश्न है, जिस पर राष्ट्रीय चिन्तन की आवश्यकता है। सम्रग रूप में उच्च शिक्षा में अनेक विसंगतियां विद्यमान है। उच्च शिक्षा, जिसका लक्ष्य उच्च बौद्धिक वर्ग की स्थपना है, बाजार का उत्पाद बनती जा रही है। खुलते उच्च शिक्षा संस्थान, आयोग्य शिक्षकों की नियुक्ति, प्रवेश प्रक्रिया आदि में निर्धारित मानकों की अनदेखी, राजनैतिक हस्तक्षेप अनुशासनहीनता, शिक्षण कार्य में बौद्धिक गहराई का अभाव आदि उच्च शिक्षा का अंश बन चुके है। विश्वविद्यालयों की आर्थिक बदहाली एवं प्रयोगिक शिक्षा एवं शोध के नाम पर की जा रही खानापूर्ति भी उच्च शिक्षा के स्तर में गिरावट का एक कारण है,

हाल में प्रकाशित 'करंट साइन्स' शोधपत्र से यह निष्कर्ष सामने आया कि भारत में शोधकार्य अनेक देशों की तुलना में गुणवत्ता की उच्च स्थिति तक नही पहुँच पा रहे।

°°

HS1

स्त्री शिक्षा : गुणवत्ता नियन्त्रण की आवश्यकता

1. संगीता पाण्डेय 2. शाहीन खान
बी0एड0 विभाग, करामत हुसैन मुस्लिम पी0जी0 कालेज, लखनऊ

महिला सशक्तीकरण के परिप्रेक्ष्य में चर्चा करना तब तक अर्थहीन है तथा सिद्धि को प्राप्त नहीं किया जा सकता है जबतक कि स्त्री शिक्षा की गुणवत्ता पर सांगोपांग विचार न किया जाये। स्त्री के व्यक्तित्व के गतिमान पक्षों को तब तक प्रकाश में नहीं लाया जा सकेगा जब तक स्त्री शिक्षा के गुणवत्ता नियंत्रण को वास्तविक मुद्दा नहीं समझा जायेगा। शिक्षा ही एक ऐसा अस्त्र है जो स्त्री को रूढ़िगत बाध्यताओं से मुक्त करने में सक्षम हैं। शिक्षा जहां एक ओर स्त्री को उसके अधिकारों के प्रति सचेत करती है वहीं उसे अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक बनाती है। अतः स्त्री शिक्षा के संदर्भ में गुणवत्ता नियंत्रण करने की दिशा में् कुछ प्रश्नों पर विचार करना अपरिहार्य है ।

°°

HS2

गीता के मार्गदर्षन में गुणवत्तापरक षिक्षक षिक्षा

1ण सरोज आनन्द 2ण प्रवीण त्रिपाठी
षिक्षा विभाग षिक्षा संकाय लखनऊ विष्वविद्यालय, लखनऊ

तस्माद् यस्य महावाहो निगृहीतानि सर्वषः
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिश्ठिता।

अर्थात गीता में केषव अर्जुन को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि– उच्च गुणवत्ता परक षिक्षक षिक्षा के लिए आवष्यक है कि षिक्षक की स्थिति स्थितिप्रज्ञ की स्थिति हो हे पार्थ जिसकी इन्द्रियॉ विशयों से पूर्णतया संयत हैं वे ही स्थितप्रज्ञ हैं ।

सामाजिक परिवर्तन एवं बढ़ती तकनीकी षिक्षा के दौर में आज षिक्षा मानवीय मूल्यों को निरन्तर खोती हुयी यान्त्रिकता की ओर अग्रसर हो रही है अतः यदि इस अतिवादी विचारधारा से हमें समाज को तथा षिक्षा को बचाना है तो षिक्षा गीता तथा अन्य वैदिक साहित्य की ओर बड़ी कातर दृश्टि से निहारती हुयी नज़र आती है। यहॉं पर विनोबा जी का कथन कि गहरा बो पर गीला बो काफी सार्थक जान पड़ता है क्योंकि षिक्षा के वास्तविक उद्देष्यों की प्राप्ति के लिए षिक्षक की षिक्षा का गुणवत्तापरक होना परमावष्यक है क्योंकि मात्र गहरी जुताई से काम नहीं चलता उस जमीन को गीला भी होना चाहिए तभी भुट्टा हॉथ भर का होगा। अर्थात पहले षिक्षक षिक्षा गुण्वत्तापरक होगी तभी वह समाज को गुणवत्तापरक षिक्षा उपलब्ध करा पाएगा। उपर्युक्त समस्याओं का समाधान करने के लिए प्राचीन समय में व्याप्त षैक्षिक व्यवस्था और षैक्षिक विषेशताएॅं, यथा गीता की कर्मयोग, ज्ञानयोग, ध्यानयोग, मोक्षयोग तथा स्थितप्रज्ञ की विषेशताओं की आज की अध्यापक षिक्षा के गुणवत्तापरक बनाने के लिए अध्ययन की परमावष्यकता है।

°°

HS3

माध्यमिक स्तर के छात्रों में व्याप्त सामाजिक अलगाववाद के निराकरण में निर्देषन एवं परामर्ष की भूमिका।

1. सरिता कनौजिया,,नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ
2. सरोज आनन्द, षिक्षा विभाग, लखनऊ विष्वविद्यालय, लखनऊ

आधुनिक समाज में निहित व्यक्तिवादी, भौतिकवादी ,पूंजीवादी व्यवस्था एवं उत्पादन प्रणाली ने मानव के दृष्टिकोण को भी अत्यन्त संकुचित कर दिया है, आज वह अपने आप से , दूसरो से तथा व्यापक समाज से अलग होकर रह गया है। विविध तकनीकी अविष्कारो एवं भौतिकवादी प्रवृत्ति ने वस्तु की अपेक्षा व्यक्ति को गौण स्थान पर ला दिया है। इस निरन्तर बढ़ती प्रवृत्ति को ही अलगाववाद या वस्तुदेवत्ववाद कहते है। सर्वप्रथम कार्लमार्क्स ने इस प्रवृत्ति की ओर ध्यान इंगित किया । अलगाववाद की इस प्रवृत्ति ने सामाजिक ढॉचे की आधारभूत इकाइयों यथा– परिवार, पड़ोस, की चूलों को भी हिला कर रख दिया जिसके फलस्वरूप इसके रूप व कार्यो में व्यापक परिवर्तन आया है। ऐसे में परिवार के सबसे उपेक्षित सदस्य के रूप में बच्चे उभरकर आते है। समयाभाव के कारण अभिभावक बच्चों

को पर्याप्त समय व स्नेह जिसके वे हकदार है नहीं दे पाते है,। जहॉ एक ओर बच्चों को अपने प्राथमिक समूहों से अलगाव मिल रहा होता है वहीं दूसरी ओर माध्यमिक स्तर तक आते आते वह स्वयं को किशोरावस्था की दहलीज पर खड़ा पाता है ।

इस प्रकार सामाजिक अलगाववाद व किशोरावस्था के अनुरूप बालक का व्यक्तिगत अलगाववाद ये दोनो विषम परिस्थितिया किषोर को असमंायोजन एवं विघटन की ओर अग्रसारित कर देती है । ऐसे में विद्यालय से अपेक्षा की जाती है कि वह अपना सकारात्मक योगदान समाज को समर्पित करें । इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु माध्यमिक स्तर पर विधार्थियों , उनके षिक्षको तथा अभिभावको के मार्गदर्षन हेतु निर्देषन व परामर्ष कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

ºº

HS4

प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में पर्यावरण जागरुकता सम्बन्धी सम्भाव्य घटकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

1. **शिल्पी शर्मा, 2. बी0आर0 कुकरेती**
शिक्षा विभाग, महा.ज्यो.फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

धरती पर जीवन के उत्पत्ति काल से ही पर्यावरण एवं जीव– जन्तुओं के बीच घनिष्ठ सह–सम्बन्ध हैं। डायनासोर युग से आज तक पर्यावरण ने जीवन की एवं धरती पर रहने वाले प्राणियों ने पर्यावरण को प्रभावित किया है। मनुष्य एवं पर्यावरण के मध्य अन्तःक्रिया का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि धरती पर मानव सभ्यता के अस्तित्व का है। वर्तमान समय में मानव की बढ़ती हुई आवश्यकताओं तथा भौतिकतावादी प्रवृत्ति के कारण पर्यावरण में गुणात्मक दृष्टिकोण से ह्रास हो रहा है। बढ़ती जनसंख्या, औद्योगिकरण एवं परम्परागत ऊर्जा स्रोतों के उपयोग इन सभी कारणों से पर्यावरण में असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न हो गयी है। परिणामस्वरूप मनुष्य को जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, मृदाक्षरण, ग्लोबल वार्मिंग, अम्लीय वर्षा, ओजोन परत का नष्ट होना, जैव विविधता में कमी, ऊर्जा संकट जैसी पर्यावरणीय समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।
प्रस्तुत शोध पत्र में उ0प्र0 बेसिक शिक्षा परिषद के अन्तर्गत संचालित प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में पर्यावरणीय घटकों की स्थिति का अध्ययन किया गया है तथा शोध निष्कर्षों के आधार पर पाठ्यक्रम में पर्यावरण घटकों के समावेश हेतु सुझाव दिये गये हैं।

ºº

HS5

शैक्षिक उत्कृश्टता ही समग्र विकास का आधार

(उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ में।)

1. शिवम् श्रीवास्तव शिक्षा शास्त्र विभाग, किसान पी0जी0 कालेज, बहराइच
2. नित्या श्रीवास्तव, संजीवनी कालेज ऑफ एजुकेशन कीर्तनपुर, बहराइच (उ0प्र0)

सरकारी ऑकड़े यद्यपि भारत में शैक्षिक विकास का ग्राफ लगातार बढ़ता प्रदर्शित कर रहे हैं, प्रत्येक प्रकार की शिक्षा की प्रगति की बात लगातार की जा रही है। प्राथमिक, माध्यामिक एवं उच्च प्रत्येक स्तरों पर आशातीत प्रगति दर्ज की गयी है, परन्तु शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर शिक्षा प्राप्त कर चुके विद्यार्थी में सार्थक परिवर्तन नहीं दिखता बल्कि उनकी कागजी योग्यता सच नहीं लगती है। **B.A., M.A.** एवं उच्च शिक्षा प्राप्त युवक अपेक्षित योग्यता नहीं प्रदर्शित करते हैं। उच्च शिक्षा की बढ़ती मांग और विश्वविद्यालयों पर बढ़ते दबाव को देखते हुए निजी क्षेत्र ने भी उच्च शिक्षा में अपनी दुकान खोल ली है। सरकारी विश्वविद्यालयों और निजी क्षेत्र के कालेजों से निकलने वाले अधिकतर विद्यार्थियों का बौद्धिक स्तर ऐसा नहीं है कि वे उद्योग और व्यावसायिक जगत की अपेक्षाओं पर खरे उतर सकें और अपनी कागजी डिग्रियों की सार्थकता प्रमाणित कर सकें।

आजं आवश्यकता है कि एक जनान्दोलन की। एक ऐसे जनान्दोलन की जो सरकार को बाध्य कर सके कि शिक्षा को गुणवत्तापरक बनाना एक अनिवार्य आवश्यकता है क्योंकि यदि शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए कड़े कदम नहीं उठाए गए तो सामाजिक असमानताएं तो बढ़ेगी ही, विकास की गति भी धीमी पड़ जायेगी।

ºº

HS6

अध्यापक शिक्षा : वर्तमान चुनौतियां

1. शोभा चतुर्वेदी दयानन्द महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय, कानपुर।
2. विकास मिश्रा, बी.एड्. विभाग अकबरपुर महाविद्यालय, अकबरपुर, कानपुर

अध्यापक शिक्षा वह शैक्षिक आयोजन है जिसमें विभिन्न स्तर वाले और विभन्न वर्गों वाले अध्यापकों को इस प्रकार शिक्षित करने के लिए प्रयत्न किया जाता है कि भावी पीढ़ी को ज्ञान एवं मूल्यों के हस्तांतरण करने में वे सक्षम हो सकें तथा उनमें तकनीकी कुशलता, वैज्ञानिक चेतना, संसाधन सम्पन्नता तथा नवाचारिकता के साथ सांस्कृतिक उद्दीपन एवं मानवता बोध का समन्वयात्मक विकास करना सम्भव हो ।

परन्तु क्या अध्यापक शिक्षा को वैश्विक संदर्भ की चुनौतियों का सामना करने के लिए किस प्रकार के सुधारों की आवश्यकता है? इन सभी प्रकार के प्रश्नों के उत्तर शिक्षक शिक्षा की संस्थाओं को एकजुट होकर खोजने होंगे।

आज की भारतीय अध्यापक–शिक्षा में उत्कृष्टता, प्रवीणता और समानता के सिद्धान्तों की व्यवहार–भूमि में बढ़ी निष्ठा के साथ प्रतिष्ठा की जानी चाहिए। यह अपेक्षा वस्तुतः नई–शिक्षा नीति–1986 के द्वारा उच्च शिक्षा जगत से की गयी है। आज विश्वविद्यालयों द्वारा एन.सी.टी.ई. के अनुमति से अप्रत्याशित संख्या में बी.एड्. कालेजों को मान्यता दी गयी है, इससे शिक्षण, प्रशिक्षण, शोध, विस्तार–शिक्षा सबसे संबंधित समस्याएँ बढ़ गयी हैं। स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रम/संस्थान तो बढ़ रहे हैं पर इनकी गुणवत्ता, इनका व्यवस्थित संचालन, इनकी वांछित उत्पादकता–प्रतिफल हीन–दशाओं को प्राप्त हो रही है, जो सर्वथा चिंतनीय है। अतः, अभिनव शैक्षिक प्रौद्योगिकी की सहायता के लेते हुए, सुनियोजित, अध्यापक प्रशिक्षण–कार्यक्रमों द्वारा निष्ठापूर्वक, सभी उदीयमान–आगत समस्याएँ समाधानित की जानी चाहिए।

°°

HS7

उच्च शिक्षा की गुणवत्ता

शोभना द्विवेदी,, शिक्षाशास्त्र, महिला महाविद्यालय, किदवईनगर, कानपुर ।

उच्च शिक्षा के अन्तर्गत उच्चतम भौतिक और आध्यात्मिक षक्तियों की खोज की जाती है । उच्च षिक्षा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों – सामाजिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और तकनीकी व्यवसायिक में नेतृत्व निर्मित करती है । विकास एवं परिवर्तन के लिये उच्च षिक्षा प्रमुख उपकरण है । उच्च शिक्षा की भूमिका राश्ट्र निर्माण एवं वैज्ञानिक विकास के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है ।

उच्च शिक्षा उत्कृटष्ता को प्रोत्साहित करती है सत्य की खोज एवं नये–नये आविष्कारों को आत्मसात करती है । आज के वैष्वीकरण के दौर में उच्च शिक्षा भी वैष्वीकरण की प्रक्रिया से अछूती नहीं है ।

पुणे विष्वविद्यालय के अन्तर्राश्ट्रीय केन्द्र की निदेषक वसुधा गरडे के अनुसार अन्तर्राट्रीष्यकरण के दौर में विष्वविद्यालय का वैष्वीकरण सहायक सिद्ध होता है । पुणे विष्वविद्यालय में आजकल लगभग 9500 विदेषी छात्र पढ़ रहे हैं। किन्तु विष्व के साथ चलने और नयी–नयी चुनौतियों का सामना करने के लिये गुणवत्तायुक्त उच्च षिक्षा की आवष्यकता है । गुणवत्ता को हम इस प्रकार परिभाशित कर सकते हैं जैसे – उत्कृश्टता, सम्पूर्णता, निरन्तरता, वर्तमान समय में प्रासंगिकता, स्वस्थ प्रषासन, आर्थिक निर्भरता । आज वह उच्च षिक्षा अच्छी है जो हमारे जीवन को बेहतर तरीके से गुजारने में मदद करे । यदि उच्च षिक्षा गुणवत्ता के प्रति सतर्क है तो वह उन व्यक्तियों का उत्पादन कर सकती है जो कि क्रियात्मक एवं सामाजिक प्रासंगिक, मानसिक योग्य षारीरिक दक्ष हों तथा अपने मूल्यों के प्रति सजग हों जिनमें क्षमता एवं विष्वसनीयता हो और जो नई परिस्थितियों में नवाचार एवं प्रयोग करने में पहल करें।

°°

HS8

वंचित वर्ग की उच्च शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन में डॉ0 भीमराव अम्बेडकर का योगदान

सुरेश कुमार, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ,

विश्व के क्षितिज पर कुछ ऐसी महानुभूतियाँ उदित होती है जां स्वयं इतिहास रचती हैं। ऐसी ही महान विभूतियों में भारतरत्न, संविधानवेत्ता, डॉ भीमराव अम्बेडकर का नाम अग्रणीय है। डॉ0 अम्बेडकर ने भारत को प्रचलित धारा से बाहर जाकर देखा पहचाना था और उसमें सुधार–संस्कार की कोशिश की थी। उन्होंने अविकसित–जड़ समाज के अंधेरे में प्रमथ्यु या स्पार्टाकश की तरह रोशनी लाने की कोशिश की थी जिसमें शिक्षा, समानता, एकता, विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सम्मिलित थी।

चूँकि डॉ0 अम्बेडकर का जन्म ऐसे समाज में हुआ था जहाँ ऊँच–नीच छुआछूत एवं अशिक्षा व्याप्त थी, और उनके साथ पशुवत व्यवहार किया जाता था तथा वंचित वर्ग को शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार प्राप्त नहीं था। ऐसी विषमता के विरूद्ध सोते हुए समाज में शिक्षा की लौ डॉ0 अम्बेडकर ने जलायी जिसके परिणामस्वरूप ही आज समाज में जाग्रति दिखाई दे रही है और इसके लिए उन्होंने नारा दिया ''शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करो'' जो शिक्षा के प्रति उनके समर्पण को इंगित करता है।

उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने सिद्धार्थ महाविद्यालय व मिलिन्द महाविद्यालय की स्थापना करायी जिसका मुख्य उद्देश्य वंचित वर्ग में गुणात्मक शिक्षा प्रदान करना था, तथा शिक्षकों की नियुक्ति के लिए उन्होंने योग्यता को ही वरीयता दी। उच्च शिक्षा के लिए प्रादेशिक विश्वविद्यालयों की वकालत की। वंचित, दुर्बल, अश्पृश्य और अनुसूचित जातियों व पिछड़ी जातियों के प्रतिभा सम्पन्न और बुद्धिमान युवकों को उच्च शिक्षा के लिए शासन द्वारा छात्रवृत्तियाँ की व्यवस्था हो, ऐसा उनका प्रयास था।

शिक्षा का केन्द्र बिन्दु 'मानव' होना चाहिए । इसके साथ–साथ उच्च शिक्षा द्वारा जाति और वर्णव्यवस्था का विनाश कर समानता व वंचित वर्ग में स्वाभिमान भरना होना चाहिए।

°°

HS9

स्त्री..........स्त्री और स्त्री

स्वदेष सिंह, विक्रम विष्वविद्यालय, उज्जैन

"स्त्री सर्वप्रथम गर्भ में स्वयं के लिये ही स्थान तलाषती है।"

यह तथ्य मात्र किसी स्थानीय समाज या भारतीय समाज के लिये नहीं है अपितु यह एक सार्वभौमिक विचार बन गया है। आज समाचार पत्रों में गर्भस्थ षिषु का लिंग परीक्षण करने वाले डॉक्टरों के विज्ञापन अत्र – तत्र सर्वत्र समान रूप से देखे जा सकते हैं। इस परीक्षण के पीछे तर्क यही होता है कि लड़का होगा तो उसे गर्भाधिकार मिलेगा और लड़की को गर्भ से बेदखल कर दिया जायेगा।

परिवार में प्रारम्भ से ही बालकों को वरीयता मिलती है और वहीं बालिकाओं में सहनषीलता के बीज इसी उम्र से बोना प्रारम्भ कर दिया जाता है; आखिर उसे उम्र भर पुरूष प्रधान परिवार और समाज में ही तो रहना है। यह उसे पालतू बनाने की प्रक्रिया का प्रारम्भ है। उसे खुषी – खुषी खिलौना बनना सिखाया जाता है; और पर्दा होता है उसकी कोमलता का। परन्तु हम यह भूल जाते हैं कि नारीत्व और स्त्रीत्व कोमलता के पर्याय नहीं हैं जो इसकी अक्षुण्ता के लिये हम उसके जन्म से पूर्व ही चिन्तित हो उठते हैं। आप सुधी पाठक हैं और यह मेरे विचारों का प्रारम्भिक दौर है .... यदि सरलता से इन तथ्यों का पाचन संभव हुआ तो निष्चित ही विचार – विमर्ष का यह क्रम क्रमवत रहेगा और हम इक्कीसवीं सदी को स्त्री सदी नहीं तो कम से कम मानव सदी तो अवष्य कह सकेंगे।

°°

HU1

राजस्थान राज्य की प्राथमिक कक्षाओं में बालिका शाला परित्याग (ड्रापआउट) दर– एक प्रवृत्यात्मक अध्ययन (2001–2006)

1. उपमा मिश्रा, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

2. जितेन्द्र कुमार , क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.सी.ई.आर.टी.) अजमेर, राजस्थान

राजस्थान राज्य में वर्ष 2001–02 से संचालित सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत बालिका शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया है जिसके अन्तर्गत बालिकाओं की विद्यालय में पहुचँ तथा ठहराव हेतु अनेक प्रभावशाली कदम उठाये गए।

प्रस्तुत अध्ययन में सर्व शिक्षा अभियान के क्रियान्वयन वर्षो के दौरान सम्पूर्ण राज्य में वर्ष 2001–02 से वर्ष 2005–06 के मध्य प्राथमिक कक्षाओं की बालिकाओं की ड्रापआउट की प्रवृत्ति का अध्ययन किया गया। बालिका शिक्षा हतोत्साहित हुई है तथा बालिकाओं मे ड्रापआउट दरो की प्रवृत्ति को बढावा मिला है परन्तु बालिका शिक्षा प्रोत्साहित करने मे सर्व शिक्षा अभियान के महत्व को भी नकारा नही जा सकता है।

ध्यातव्य है कि अभियान की कार्यनीतियों मे बालिका शिक्षा के अन्तर्गत अनूसूचित जाति एवं अनूसूचित जन जाति की बालिकाओं की शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य रखा गया है।

अध्ययन में प्राप्त परिणामों मे यह पाया गया कि अनूसूचित जाति की छात्राओं में ड्रापआउट दरों मे कमी हुई जिससे यह सिद्ध होता है कि अभियान ने अपने इस लक्ष्य को पूर्ण करने मे विशेष सफलता प्राप्त की है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि यदि सर्व शिक्षा अभियान का सघन रुप से क्रियान्वयन किया जाये तो बालिकाओं मे होने वाली ड्रापआउट समस्या के उत्तरदायी कारकों को काफी हद तक निष्प्रभावी बनाया जा सकता है तथा ड्रापआउट की बढती प्रवृत्ति दर पर अंकुश लगाया जा सकता है।

°°°

HV1

वैकल्पिक शिक्षा के संदर्भ में महिलाओं का यथार्थ एवं भविष्य

1. वन्दना सिंह 2. प्रियंका

महिलायें किसी समाज का एक महत्वपूर्ण घटक होती है जो माताए पत्नी बहन तथा आय उपार्जक जैसी अनेक भूमिकायें निभाती है। इस बात को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है कि शिक्षा महिलाओं की इन भूमिकाओं को निभाने में सहायता कर सकती है क्योंकि यह उनकी सामाजिक कुशलता और जागरूकता बढाने में सहायक है। किन्तु सभी महिलाओं को नियमित शिक्षा उपलब्ध नहीं है। इस स्थिति में वैकल्पिक शिक्षा ही एकमात्र ऐसा साधन है जो समाज में उनकी भूमिका को प्रबल बना सकती है। अैर उनके लिए बेहतर भविष्य सुनिश्चित कर सकती है। वैकल्पिक शिक्षा द्वारा प्राप्त जारूकता इन्हें शोषण के विरूद्ध लडनें और अपने प्रति होने वाले भेदभाव को समाप्त करने में सहायक होती है। यही वस्तुतः बेहतर तथा सबसे प्रमुख सशक्तिकरण है। अतएव वैकल्पिक शिक्षा महिलाओं विकास प्रक्रिया में भागीदार बनाने हेतु आवश्यक है। यघपि महिलाओं के सामाजिक सृमद्धि और उनके भविष्य को सुरक्षित बनाने हेतु वैकल्पिक शिक्षा के रूप में अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाये गये है परन्तु अभी इस दिशा में और प्रयास किये जाने की आवश्यकता है।

°°°

HV2

माध्यमिक शिक्षा–(आवश्यकता एवं महत्व)

विनीता श्रीवास्तव, शिक्षा संकाय, दयानन्द बछरावं पी0जी0कालेज बछरावं, रायबरेली,

विकासशील भारत की जनतंत्रीय प्रणाली में माध्यमिक शिक्षा का विशेष महत्व है। माध्यमिक शिक्षा ही यहाँ की जनशक्ति का स्त्रोत है। क्योंकि यही वह शिक्षा है जिसके द्वारा उच्च कक्षाओं में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थी और प्राथमिक स्कूलों के लिए अधिकांश शिक्षक तैयार किये जाते हैं। इस शिक्षा के अन्तर्गत कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा आती है। जो मुख्यतः 12 से 17 वर्ष के विद्यार्थियों के लिए होती है। इस स्तर की शिक्षा के अन्तर्गत छात्रों को वह समस्त ज्ञान और कौशल प्रदान कर दिया जाता है जो भविष्य में उनके सफल एवं सामान्य जीवन के लिए आवश्यक होता है। यही कारण है कि इस शिक्षा को अन्तिम सामान्य शिक्षा ;ज्मतउपदंस ळमदमतंस म्कनबंजपदद्ध के रूप में जाना जाता है।

तत्पश्चात् माध्यमिक शिक्षा के शैक्षिक विकास के नवीन कार्यक्रम प्रारम्भ करने के लक्ष्य निर्धारित किए गये। इसके प्रबन्धतन्त्र में सुधार किये गये, पुर्नसंरचना पर ध्यान दिया गया तथा देश–काल की परिस्थितियों के अनुरूप पाठ्य विषयों में परिवर्तन किये गये। इसके साथ ही साथ शिक्षण विधियों में सुधार किया गया तथा पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक तकनीक और व्यावसायिक विषयों का समावेश किया गया। विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं को प्रारम्भ करके माध्यमिक शिक्षा की संख्यात्मक वृद्धि के साथ–साथ इसकी गुणवत्ता में सुधार करने के प्रयत्न किए गये। वर्तमान समय में माध्यमिक शिक्षा के संगठन, इसके प्रबन्धन, पाठ्यक्रम, शिक्षण–विधियों एवं अध्यापकों की स्थिति तथा शैक्षिक स्तर पर इसकी आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालने का प्रयास प्रस्तुत प्रपत्र में किया गया है।

°°°

HV3

गुणवत्तापूर्ण सार्वभौम प्राथमिक शिक्षा

1. विवेक कुमार श्रीवास्तव,साकेत पी0जी0 कालेज, फैजाबाद (उ0प्र0)
2. अमित कुमार, डी0डब्ल्यू0 टी0सी0, कानपुर (उ0प्र0)

बच्चे देश के दर्पण हैं, वे राष्ट्र की मुस्कुराहट है, बच्चों में वर्तमान करवट लेता है और भविष्य के बीज उसी में बोये जा सकते है, किसी भी राष्ट्र के विकास और समृद्धि के लिये मौलिक तत्व शिक्षा है और प्राथमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला है। प्राथमिक शिक्षा का राष्ट्रीय विचार धारा और चरित्र निर्माण में भी बहुत योगदान है। प्राथमिक शिक्षा का सम्बन्ध किसी वर्ग या व्यक्ति विशेष से नहीं है बल्कि सम्पूर्ण जनसंख्या से है, अतः इसकी उपेक्षा करना किसी भी देश के लिये पतन का कारण बन सकता है। आज के युग की विशेषताओं व आवश्यकताओं को देखकर स्पष्ट है कि शिक्षा के सभी स्तरों पर गुणवत्ता एक मुख्य विषय है। प्रस्तुत शोध–पत्र में गुणवत्तापूर्ण सार्वभौम प्राथमिक शिक्षा की कुछ समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है तथा प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन में शिक्षकों, प्रशासन व समुदाय की प्रभावी भूमिका निर्वहन के लिये कुछ सुझाव भी प्रस्तुत किये गये हैं। जिसके अन्तर्गत शिक्षकों द्वारा उपयुक्त समय सारणी, विद्यालय का प्रभावी वातावरण, निर्धारित विषय वस्तु की सम्प्राप्ति, शिक्षा को आनन्दमय व रूचिकर बनाना। प्रशासनिक स्तर पर शिक्षकों से कम से कम शिक्षणेत्तर कार्य लेना, कार्य निष्पादन के आधार पर पदोन्नति, सभी विद्यालयों तक यथा सम्भव तकनीकी, संचार, यातायात सुलभ कराना, सभी शैक्षिक योजनायें गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के साधन के रूप में प्रयोग हो न कि साध्य रूप में तथा समुदाय के विशिष्ट व्यक्तियों का प्रशासनिक योजनाओं के अधिक से अधिक सफल क्रियान्वयन में योगदान, साधनहीन व वंचित वर्ग के परिवारों में शिक्षा के प्रति जागरूकता, आदि अनेक सुझावों को अपना कर प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता को सुनिश्चित किया जा सकता है।

°°

ALL INDIA ASSOCITION FOR EDUCATIONAL RESEARCH 2009
ABSTRACTS OF PAPERS (HINDI)
Arranged Alphabetically: Name wise (Not surname) 52 Abstracts

HA1-10, HB1-2, HD1-2, HG1-2, H11, HJ1-2, HK1-4, HM1-2, HN1, HP1-5, HR1-6, HS1-9, HU1, HV1-3

Index (Alphabetcal Names of 1st Author of papers in Hindi Language)
(Abstracts of Registered Delegates)

1 HA1 Alka Katiyaar, Pratibha Verma: Mahila Mahavidyalaya Kanpur
2 HA2 Alka Pandey Lucknow Univeristy
3 HA3 Amita Bajpai, Bhajrang Bhushan: Lucknow Univeristy
4 HA4 Amita Singh, Anamika Devek: Lucknow Univeristy
5 HA5 Anand Yadav, Dharmendra Kumar Bhartiya: Dharikpur, Post- Premkapura
6 HA6 Archana Purohit: Shah Goverdhan Lal Kabra Coll
7 HA7 Arti Kanaujia: Shashi Bhushan Balika Degree College
8 HA8 Ashish Pathak, Anjana Tripathi: R L V D Khera College
9 HA9 Avanish Kumar Singh And Tulika Mishra: BHU Varanashi
10 HA10 Avneesh Chandra Sonker, Sudhnshu Pandey: D B PG College ,
11 HA11 Aftab Z. Siddhque, Sitapur Sansthan
12 HB1 Babita Singh: University of Allahabad
13 HB2 Bhupendra Singh Detha,GS Shekhavat: Shah Goverdhan Lal Kabra Coll
14 HD1 Deepa Krishan: L.M.P.V.Girls P.G College
15 HD2 Dinesh Singh, Dharmesh Kumar Saraf, Allahabad
16 HD3 Divya Sharma, Renu Thakur: University Of Delhi
17 HG1 Geeta Rani: BSNV Degree College
18 HG2 Gopala Krishna Shukla, Anuradha Tripathi: S.K.M. College of Education
19 HG3 Gurupmeet Kaur, Bheela
20 HI1 Indu Kumari:Nari Shiksha Nikatan, Lucknow
21 HJ1 Jaya Shukla And Chetna Pandey:University of Allahabad
22 HJ2 Jyotsna Saxena , Mukesh Kr. Dubey: S.W.T.PG College Dehradoon
23 HK1 Kalpana Verma: Rama Degree College, Lucknow
24 HK2 Kanchan Gupta: Lucknow University

25	HK3	Kavita Verma: Kalyan College
26	HK4	Kumkum Srivastava, Ratnartuh Mishra: Lucknow Univeristy
27	HM1	Mamta Gangwar: Mahila University
28	HM2	Mudita Chandra: Jamshedpur Women Degree College
29	HM3	Mayank Kumar, Dinesh Kumar,Department of Education,University of Lko
30	HN1	Neetu Yadav: VBTC
31	HP1	Parul Mishra: Avas Vikas Colony
32	HP2	Prabha Chaudhary, Rekha Shkula: SNGPG College Varanasi
33	HP3	Pratibha Srivastav: Muslim Hamdard Sarda Patel PG College
34	HP4	Pratiksha Verma: L.M.P.V. Girls P.G. College, Gosiganj
35	HP5	Preeti Jaiswar, Rachana Sanyal: Lucknow Univeristy
36	HR1	Rama Sankar Pandey, Amit Kumar
37	HR2	Rama Yadav: Kalyan P G Collgee
38	HR3	Rashmi Srivastava: Heera Lal Yadav Balika Degree College, Lucknow
39	HR4	Rashmi Chaturvedi: Barkatullah University
40	HR5	Rashmi Prabha Shukla, Namrta Dewvedi
41	HR6	Reetu Tiwari, Nishi Tripathi: Shashi Bhushan Girls Degree College
42	HS1	Sangeeta Pandey, Shaheen Khan: Karamat Hussain P.G College
43	HS2	Saroj Anand, Praveen Tripathi: Lucknow Univeristy
44	HS3	Sarita Kanaujiya, Saroj Anand: Lucknow Univeristy
45	HS4	Shilpi Sharma, B R Kukreti: M J P Rohilkhand University
46	HS5	Shivam Srivastava, Nitya Srivastava Kisan P.G. College
47	HS6	Shobha Chaturvedi,Vikash Mishra: DWTCmac Robbert Gunj
48	HS7	Shobhna Dwivedi: Mahila Mahavidyalaya Kidwai Nagar Kanpur
49	HS8	Suresh Kumar: Lucknow University
50	HS9	Swadesh Singh: Vikram University Ujjain
51	HU1	Upma Mishra,Jitendra Kumar
52	HV1	Vandana, Priyanka
53	HV2	Vineeta Srivastava: Dayanand Bachh. P.G. College
54	HV3	Vivek Kumar Srivastava, Amit Kumar: Saket PG College